बलचनमा

(मैथिली)

NOT FOR ISSUE

मूल लेखक

ना गा र्जु न

मिथिला सांस्कृतिक परिषद, कलकत्ता

प्रकाशक :
मिथिला सांस्कृतिक परिषद्
पंजीकृत कार्यालय :
३०, बालमुकुन्द मल्लर रोड,
कलकत्ता-७

विद्यापति-स्मृति-समारोह १९६६-६७

दाम : ४) टाका

SAHITYA AKADEMI
Mai-256
Mai-256

प्रथम संस्करण : ११००
५, फरवरी, १९६७

घटना समय : १९३७ ई० के शुरु तेर

मुद्रक :
कुमार प्रिंटर्स
५बी, मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट,
कलकत्ता-७

१

जखनी हम चौदह बरखक रही तखनिये हमर बाप मरि गेल। परिवार मे माइ, दाइ आ छोटकी बहिन छलि। एकटा छोट-छीन घर छल। घरक अगुअति मे नान्हिटा आंगन छले, बामा कात साठ-दस धुर बारी छल। ओहि बारी मे भरि साल किछु ने किछु उपजा होइते रहै। बारीक पाछू मे गिरहथक इनार छलनि, आ इनारक सोंका मे खेत। दहिना कात कनिके हटि कऽ हुनके लोकनिक पोखरि सेहो छलनि।

गिरहथक जमीन मे बसल छली। हमरा अपना जिनगीक सबसँ पहिलुक बात एखनियो थरि कनी-कनी मोने छबे। मालिकक दूरा पर हमरा बाबू कें एकटा खम्हेली लगाकऽ बान्हि देलै रहै। ऐठी सँ लिखा धरि काँच करची सँ फोड़ि देलै रहै। कखो-कखो देहक छाल नोचा गेलै, मारिक चोट सँ। आँखि सँ नोर टप-टप बहिकऽ गाल आ छाती डोइत नीचा बहल जाइत छले। साँसे देह कारी मजीठ भऽ गेलै हमरा बाबूक। थोरबे दूर पर छोटका मालिक चौकी पर अमराज नाहित बैसल रहथिन आ रहिमा हाथ सँ माछ फेरैत रहथि। हुनकर लाल-लाल धसल-धसल आँखि देखिकऽ केकरा ने डर हो लैतै। हमर बाई घर-घर कँपैत मालिकक पएर धऽने छले। आ बकारि डोइत छल, मालिक यौ.....मालिक.....छोड़ि दियौ यौ मालिक..... लजुआक प्रान छूटि जेतै औ मालिक दोहाइ

सरकार कें.....अँहीं माई बाप छी, छोड़ि दियौ। माय के काल कनैत देखि हमहूँ सुकुर-सुकुर कानेऽ लगली। हमरा छोटकी बहिनक तऽ डरे प्राणे सूखि गेलै।

कनीकालक बाद बुकलिये जे हमर बाबू मालिकक साथ सँ दूटा किसुनभोग आम तोड़ि लेने रहै। काँचो किसुनभोग खाय मे चोरठ मालिक बड़ नीमन लगै छै। आम तोड़ैत किओ ने देखने रहै, बाबू बखारी के दोग आम नोइत रहै तखनिये किओ देखि लेलकै आ चुगली लागि ऐलै। ओ बात पर मलिका मालिक तानने आनि भऽ गेलखिन आ.....।

हमर बाबू मरि गेल। बाइ कें कोठइया अर लगैत रहै। किछु मालिक सँ लऽकऽ आ किछु इमहर-उमहर सँ ताकि-हेरि कहुना फिरिया-करम भऽ गेलै। हमरा मरदनिक छतरी कहुना टूटल। माइ वा बाइ दुनू गोटेक विचार भेलै जे कोनो मालिकक घरी मे हम चरवाही करी। बाइ नइ मानै ओ कहै एखनिये सँ काम में जोति देबही तऽ करेज टूटि जेतै। मुदा माय कहलकै—एखनिये सँ घरक काज-फिरिन नइ करतै तऽ अवारा भाहित करतै।

किछुए दिनक बाद हम छोटका मालिकक महिनक चरवाही करै गेली। छोटकी मलिकाइन कें हमरा रखबाक कनिको विचार नइ छलनि, ओ घर मे अठकन्नर कऽ देखलिन। हमरा देखिये कऽ ओ हाकरोस करऽ लगलखिन। ई तऽ बखारी छूनइ कऽ देत। अकादइन पेट छै एक धाँधाक। डेढ़ सेर दिन मे खैत आ डेढ़ सेर राति मे। गाँसि देह धाँधा के पेटे छै। पेट हे की कोठि से नहि जानि। मैए गे.....मैए.....।

हमर बाइ हमरा दिल दुलार सँ ताकि कऽ मलकाइन के कहऽ लगलनि—से नहि कहिओ मलिकाइन। हमर बचनमा बड़ कम खाइथे, रोटी, मकई,

चाउर, साग, काउन जे देबै खा लेत। खेबा-पीबा मे कनिको नखेड़िया नइ छथे।

हम एकटा पिल्ली पहिरने रही। बिल्ली दिस तकैत मलिकाइन कहलखिन—आ.....देख, कपड़ा-लपड़ा हम ने देबै। ई मुनिकऽ बाइ मर हँसऽ लागलि।

अइपर बाइ कहलकैन—अहाँ नइ देबइ तऽ के देतइ। अहीं आखर के ऐंठ-कूँठ खा कए, अहीं आखर के फेरन-फारन पेन्हि के हम सब अपन जनमो सुधरल करइ छी। जन देबइ आहाँ त पोन आनऽ खातीर सुत अनतऽ कतऽ सँ अउतइ?

अइपर मलिकाइनक आँखि-मुँह चमकऽ लगलैन। दाँत दबुफक फुल, ठोर लटकोइऽ पाकल कइ—अरो, बड़ बुजरि रहथिन मलिकाइन!

एकाइक आखर के चिबा-चिबा कऽ बजलाइ—खायक दिअइन, पहिरा दीतो दिअइन, ऊपर सँ दुअन्नी! नापरे! एसे के देतइ? सभ टा काज लिखावक पड़त, बुकरइत-बुकरइत मगज खालि भ जेत।

बाबी फेनू मलिकाइन के पैर धऽ लेलकइन आ बाजलि—बाइ सँ जहीं बलचनमाक माए-बाप मेलिअइ! अहीँक अइंठ खा कऽ एकर दिन घुरतइ मइलमाइन!

तकरा बिहाने सँ हुनका ओइठाँ हम काज करऽ लगली। ओना रहिअइन तऽ भइँसिक चरवाह, मुदा आनो कतेक काज कऽ दिअइन। नेनाकें टगने रहिअइन, पानि आनि दिअइन भरिकऽ, दोकान सँ नोन, कड़ू तेल, मशाला घुना दिअइन, जोति हेहो दिअइन।

मालिक लोकनिक ई घरैना कोनो जमाना मे बड़ पैघ रहइन। खाब जमीन्दारी तऽ कम्मे बन छलइन, मुदा बाजब-भूकन उएह। माल जाल चारि पट्टी

मे बाँटल। हवेली से फराक-फराक। गाछी-बिरछी, बँसवारि, कलम, खाड़ोरि, पोखरि, परती-परॉत—एतना धरि साँझिए रहइन।

छोटजन मालिक कहूँ मनेजरी करइत रहइथ। मलिकाइन बड़का घरक बेटी। हुनका लेखे बिना दूध-दहीक खेनाइ आ गोबर माटल गिड़नाइ एकके बात। से, ई गुजराती महीस दू सए मे ओ मरुवने रहथि। सेहो तेहो त दोइक नहि, आ पाछी गेल रहइ मरि। तँ बिसुकिये गेल रहइ। पुछारक हाड़ झक झक करइ। चरबाह पड़ा क कहिदार चल गेल रहइन। एखन कोनो दुसाध रहल। ओकरा एकटा गोआरिन सँ हेम-छेम भऽ गेलइ। पकरला गेल त बड़ुआरि लगइ। मलिका मालिक बड़का देखलीन।

आब तेसर चरबाह रहिअइन हम।

अन्हरोखे महीस खोलि दिअइ। पीठ पर पड़ि रहिअइन।

पहुँची में सोहरिक खोर लपेटि ली। भूत-परेत त नइ मुदा महीस लग आयए नइ; लहन खेबक फसिल चरि जाइ त अलमस्त। चरबाह कें एकरे डर, आन कथूक डर नहि। खुरा हम जे चरबाही बेलो से मास रहइ जेठक। माथ-मोन खाली। चित भऽ कऽ महिसिक पीठ पर पड़ि रही, ओ अपन मुँह मारने रहए।

किछु दिन भेल देखइ कि ओ हमरा चीन्हइ लागल। अइ सँ पहिने माए, दादी आर रेनी, इएह तीन गोटे हमर अपन रहए। आब महिसिओ हमरा लेखे अपन समाज भऽ गेल। लाल-लाल पैर-पैर ओकर आँखि, भकरहा साँड़ अहलन हमरा बितरल नइ अइत।

भैंसी चरा आबी त बाति भात खाइ, कहियो कहियो एक छन चाउर भेटए त सएह भिजा क फाँकी। कहियो बन-बड़िजनाकए मड़ुआ, की खुद्दीक रोटी पकइ तऽ तही मे सँ तोड़ि क आधा चाहे एक कोन हमरो परि लागए।

लखन धुलुर कें कोरा लिअइन। दुपहरू रहथीन, से बड़ खिसिआइ। तेना कें भम्हाड़थि जे की कहिअइ! मलिकाइन केर दू टा नेना मरि गेल रहइन, ई सेहर कोरा मे रहथिन। आब चारिम देया लए रहइन। नहिराक एकटा दुलरुआ खबासिनी रहइन से सकरी लेना हम चहिए रही। साँझि धरि करऽ लागए तऽ हम धुलुर कें कऽ जाइ कऽ आमारा पर बइसा दीअइन आ दलान दिस चल आबी।

कालक डरे छोह कइयो ओढ़िआ!—मलिकाइन चिचआइथि, आ से अही काने हम सुनी। बइसने तऽ काज चलनिहार नहि! खुरपी आ छिट्टा लऽ कऽ घास करए बहराइ। बइसलका खरमण्डल! खारि-धूर भऽ भऽ भऽ भऽ जाइत। भरि बाप ओन्हराइ लखन जाइ कऽ पथिया-आध पथिया घास। धूपी तऽ आबऽ मे कोनो दिन बड़ देरी भऽ जाइ। कहिआ गिरहथनी ललकि उठथि जे आर जनिपिट्टा कें! कतऽ निखत्तर चल गेल रहएँ? कोन ठा बइसि कें कोन आधक संगे कलही मजइ छुले हएँ?

कहिओ कहिओ चारि चटकन भइयो रहइ। तइ दिन बेरिया धरि कनपट्टी लहरए.....

खुशी रहथि त मुलायम-टटाएल पकवान, अम्मल आर पिकुआहा आम, दुकड़ी लागल बड़ी, आसुक तेवाड़ि कोर भेटए। तइ पर कहइथ की तऽ एहेन बस्तु तोहर एकइस पुरखा नइ देखने हेतइ! बुझलह!

नइहर सँ भार-बोर बरोबरि अबइन। खगता कथूक नइ, तइओ मालिक परदेस ओगरने रहथि। बइ मे जमा करइथ। आसरम छोड़ आ खर्च नापल-जोखल। गहना-गुड़िआ बर्तन-बासन, नूआ-बस्तर, रेलम-पटोर सं भरि ठा आकस भरल छलइन, तइओ नहा-सोनाक बीच आंगन मे ठाढ़ि भऽ कऽ मलिकाइन जिनइ दीनानाथ-दिनकर सँ धन-बीत गछलीन्ह।

महींस हम मोल में खरीदी। गाछी में, जहाँ-तहाँ गामक चरवाह सभक छुटान होइ। हमहू आइ गमछो मे बेसी दिन धरि अनुभार नइ रहलहुँ। एकके बटारोक कइ लोक चरवाही करइत रहए। अढ़ाए पहर राति मे के महींस खालिअइन से एकके बेर मुन्हारि लोक कइ अबिअइन। अपन-अपन दुख बिसरि जाइ, आ खूब खेलाइ हमरा आउर। कउखन कउड़ी, कउखन लत्तरा, कउखन कबड्डी कखनो बाघगोटी आ गोलघटान, कखनो कलम मे गाछ पर चढ़ि कइ दाल-बाती.....किलिम किलिम केर खेल हमरा आउर खेलाइ। गोल बान्हि कइ बइठी, लबूरी कक्का बड़की टटा खिस्सा कहए, कान राखि कइ से सुनइत जाइ। चर-चाँचर सँ फिमउर-कउहर-साइस उमाड़ि अनइत जाइ, से लोहि लोहि कइ खाइ। पलोक आगि मे झरका कइ अन्हइ माछ उकाबी त सेही भोग लगाबी कहिओ-कहिओ। भरि गामक बाबू-भइया लोकनि केर अदगोइ-बदगोइ हमरा आउर करिअइन। नीक-अधलाह सब कथुक चर्चा होइ।

लबूरी कक्का नाटे। आनिक बाबुक। कान दूनू खुब रहइन, कपार छोट। आँखि बेश तेज छुटा जकाँ। अपना मालक सेवा ओ खूब मन लगाकें करइथ। चरवाह सब हुनका अपन पिसी-पिसामह जकाँ मानइन। मड़ड़ कहिओ कोना भैंसी के मारने होइथीन, से हमरा लोकनि कें कहा देखल, हुनका भैंसोक आँखि मे कहिओ बेसी लाली नइ देखने हेतइन। भरि छाया पानि मे ठाढ़ कइ कइ दूमिक मूड़ी सँ ओ महिषोक मोह-पेट मलइथ।

एक दिन हम दुपहरिया कें लबूरी कक्काक आँगन गेलहुँ। बड़का मालिक बथान बेश देख रहैन। गोइठ टा बड़ड़ आ चारि टा भैंस। सकरा लए तान गो चरवाह। बूढ़ा ठामहि एकचारी मे रहइ छला। देखलिअइन हुक्का गुड़गुड़ैथ छथ हमरा। बू छोटकी नारिकेरबला हुक्का पिअइ छल।

बजचनमा

नजरिक इसारा सँ लग मे बइठ कहलनि आ फेनू पुछलइन जे तोरा महींस के ई दोगर माल थिकइ की ने।

हमरा अजगुत लागल। कहलिअइन—कक्का, सौ कोना ई माल बुझि गेलहक?

अइसर पतरकी मोंछबला हुनक उपरका ठोर फाटल भ गेलइन, बजला—रबो, चरवाहिए मे त हमरा आउर के जिनगी एहन मेल, एतबो नइ बुझबइ?

हुक्का लम्बेलोक भरे ओकटा देलखीन, चीलम अलनि कें फेनू बजला—मलिहरसँ माति क आएल रहिअइ त बाइसम बर्ख रहए। तोहर बाप लालचन तोरे एती टा छल हेतइ.....आऽऽ हे ऽऽ, हुकलएँ। अइमेर महींस तोहर पाछीसँ बिपतइ....."

सखन मड़ड़ चढ़ला आ बुड़िआ भैंस लग जा के धनदिस बइठि गेलइथ। गहिकी नजरिसँ अठवड़ी बीछइ लगलखीन।

लबूरी कक्का हमरा बड़ मानइथ। हमरो हुनकर टहल टिकोरा मे बेस मीन लागए। लोना हम रही बड़ गोआर, ओ बाबुक। हुदा से नहि कहिओ बूझि पड़ल। खाइ पिअक कोनो चीज-बजल हेतन कें हवेली सँ लेटइन त बइ मे सँ हमरा लेल किछु रखबे टा करइथ।

मलिकिना मालिक के छुट्टी कम्मे होइन, तइओ जे मास पर छुट्टी कइ कइ दू चारि दिन रहि के बिदा होइथ त इसटीकन बिछोना बिस्तरा उठइत-बइठइत कहना हमहीं इ अबिअइन। गाम सँ मधुबनी अढ़ाए कोस पकिजा। दाइ टूटि जाए एक लेढ़ें। आगे पसेने नहा जाइ। आ सहन गाड़ी लाटफारम सँ घुसकए लगइ त मालिक दू गो पैसा हमरा दिश बीग दइथ।

पइसाक मूड़ी, आ पइसाक बीबी। कैंकेन-फुकेन गाम आबी चूरि कइ।

बजचनमा ७

हमर माए अइ घर मे बिअहुता भइ कइ नइ आएलि रहए, सनन्थ मेल रहइ। बाबू कमाइत रहइ टाका दिस कतउ, पाकू ता जिनसी गार्हि पर रहल। सुरल त हमरा आखरके कहा लातेक खेल दइ गेल। ओहू जमीन पर मलिका मालिक नजरि गड़ओने। कहिया कतइ धन लारइ गो टाका देने रहथीन लाबा कागत पर अंगूठा छाप लइ कइ। से सूदि बढ़इत बढ़ हमही सब लिआ गेली, कर्जा नहि लिआएल हओ माइ!

मलिकाइन दुअन्नीक हिसाबें भरि सालक दरमाहा देइ गो इरइआ भागों पाछों देथिन तइसें की होअए? अइकालाक राति परलबकेर इनरू बजबइत आएए। धर्मो आ चउमासा त कोनो तरहें खेपि ली, मुदा जाड़ कटनाइ पहाड़ भ जाए। ओछाबए खातिर दू ओटी नार पोआर आ देह झाँपए खातिर गुदरी केथरी.....पतरो जें नइ जुरए त पूसक राति जमराजक सहोदरे बहीन। खूब-भूभों लेल चाही गोइठा-करसी। से त देनेक माल-आलक हेतर नहि। हमरा घर मे माल आलक नाम पर दू गोइ बकरी टा छल। हँ, बकरीक मेंङारी आजकाला मे खूब काज अबइ तथा धरि मान अछि।

बुढ़िआ पोखरीक भीतर बइक माछतर कोहु ठाढ़ छीइक। बाँसेक आम्हसन्देली, बाँसेक पाँति, बाँसेक बरेली.....पहर सें खारल बालीक चार, माल देइ माल लए कोहुआइ। तहिआ अँइस खूब पेरल माइक आ खूब गुड़ बनइ। हम दुनू भाइ-बहीन कोहुआइ ने बेसी काल रही। परव हाँकि दिअइ, कोहुक ठीरतर कुलिआरक टोली बइठ रहइअइ, भट्टी मे पतली कोंकिअइ, लखोड़ि लखोड़ि क कड़ाहक पेट साफ क दिअइ.....बरला मे खूब अँइस चिबाची, रस पीबी, गुड़क आड़ी खाइ आ राति कइ भड़िए सम गरमा क सूति रही। कहिओ कहिओ माइ डंडा कइ लए जाइ कागय त कैओ बाजइ—

"छोड़ि ने दही, घर मे कोन दोसरा छउ जे अइ जाड़ मे ओढ़ैबहिन, भले तइ सूतल छउ!" जड़कालामे माल डू माल एक साल अहिना चलइ।

एक दिन मलिका मालिक माए कें चाल पाइलखीन। पाछोंलागल दाँतिओ गेलइ आ हमहू भुमलिअइ। बलानपर बड़का चसकी, तइपर पंडिआ ओछाओंल। मालिक तइ छलाहे, गामक बूढ़ा पण्डित सेहो रहइथ। मालिकक हाथ से पितरिआ टाल बला सरौता छुलइन। सुपारीक कतरा पंडित जी दिस बढ़बइत बजलाह—बलचनमा ला जीस ता हमरा उपाय देत रहल आ कने एकरा लोकनिक रुचि त देखियो...

पंडित जी कतरा काँकि लेलइथ, टुटलाहा कमानी वाला चसमा नाकपर सँ हटा कइ कपार पर चढ़ओलैथ। कनीकाल धरि हमरा दिस तकइत रहि गेलाह। फेनू कहलखीन—जशोधर बाबू, अइ मुखोंड़ाक त बड़ी बुद्धी चमकइ छइ। हँ, तकइए केहेन सुन्दर-सुन्दर!

मलिका मालिक गुड़ुला कइ मूछो कोलउलइथ। सुपारी चिबबइत बजलाह—हँ गुरु, भारी हरमजादा अछि। ओइ दिन मोजफ्फरपुरवाला ठाकुर आएल रहथि। खबाइ कने दुःखित परि गेलइन त कहा पठोलिअइ जे बाँसि बहुन आबि कइ से नहिए ने आएल बदमसवा!

हमरा दिससँ दाढ़ी बाजलि—आँखि सीचब सँ चेतनक हुते ने होइत, बालकन त कहुका देह धीक। तइपर भरि दिनुका थाकल-ठेहिआएल, राति कइ की कोनो होश रहइ छइ गिरहथ!

मालिक डटलखीन—"चोप!"

पण्डित जी नजरि नचबैत बजलाह—"राई एवं पवित्रं" हुदा मालिक कें तइ अपन मोटी कहुना लाल करबाक छलइन। मिठबोला बनि माएकें कहए लगलखीन—बलचनमा-माए, जो त जनितहि छेंए, बेर-कुबेर ठोरा लोकनिक

खाहिर हम कहिओ अपन पाएर पाछाँ नहि कएल। दू फेर काल पड़लइ, तइ चारि दैलिअइ, पाँचक काल पड़लइ तइ इत। पलिवार जेहने अपन तोहरो पलिवार हमरा लेखें सेहने। तखन की तइ काम-धरोअन भीड़-भाड़ ने कइखन तोरा समक अभेला-कुभेला लेही होइ छउ से नहि, मुदा गहलो-आ बहिआ दूनू दू नइ होइ छइ, होइ छइ एक्के। आन केओ काज नइ अनोनइ, कम-फुक्का गुइक कोन-कमी।

सहन फेनू हमरा अपना सग बजा लेलेथ, पीठ पोछइ पर हाथ फेरइ लगलइथ। माएकें कहलखीन—बलचनमा-माए, तोहर दिन आब जल्दिए घुरइत। बेटा कमा कें ठाल लगा देतउ। दुख थोड़ये दिन रहलउअए।"

माए अलमलकक ठाढ़ी भेल ठाढ़ रहए। ओकरा ई मुकइ मे मे अथइ जे मालिक कोन नाटक कइ रहलेथ अए। दाही गुम-सुम छाँल। हमहू वही इहएले। पण्डित तमाकू चुनबैत।

पण्डितजी बजलाह—जे बहिआ महलोक हुकुम मानए ओकर जनम फेर बहिआ भइ कइ नहि होइ। आज-तमाक की छीक तइ माइक छीक। अइसँ जतबा उपकार होअए ततबे फल।

तखन मालिक एक बेर हमरा दिस तकलेथ, एक बेर माएक दिस। कनी काल रहि बजलेथ—काल्हि छिकइ बुध, परसू बिरहस्पति, सजइली चलिअे कनी.....।

हमरा घरसँ पश्चिम मालिकक भोड़ खेत 'तिमकोनमा' रहइन। कइ बुइएक हमरो जमीन ठामहि रहए, ओटकिनमी कोली दूनू मिला देला सँ चौकोर भइ जाइत रहैक। मालिक कें ओहि जमीन पर नजरि जलइन।

माए हमर गुम्मे रहलि, बाजिओ। हम बहिआ ई सब किछो बुझइत नहिए। तमाकू चुकरि कइ पण्डीजी बजलेथ जे ओ जमीन राखि कँए की करबे? कहिओ चारि सेर मडुआ, कहिओ चारि सेर मुसनी, कहिओ पथिआ-साथ पथिया अल्हुआ...। हम तइ ओइ उसरहा कोली मे कहिओ हरिअरी नइ देखलिअइ।

दादी मालिकक पाएर छानि लेलकइन, कलपए लागल—दोहाइ सरकार कें, लछुआक अरजल जथा आब इएह टा रहि गेलइए। एमरी छोड़ि विमल मालिक! अहाँ धाउर के कथीक लगता अइथ...

मालिक हूँ हूँ हूँ हूँ करैत अपन पाएर हटा लेले रहइथ।

हमर माए कहलकइन—ई जमीन धरक नगीच पड़इ छइ। धिओ पूता चारि दाना छीट वइ छइ त हुक्का ने हुक्को भइए जाइ छइ। बदला मे कइर्ठ अनतइ दू कट्ठा खेत देथिन से जाइकइ उपजतइ? दस बरसक टेहुक हुवे कोनासे सम्हरतइ, ई कहउथ?

मालिक उठला। बेयालक खुट्टीमे चोटा टाङल रहइ, तइसँ नीमक खड़िका पहार कइ अनलेथ। दांत खोपइत बजला—हम सबटा ठीक-ठाक कइ देबउ। एते खेती-पाती होइले छइक, तोहर दू कट्ठा रोपल जेतउ तेही कोनो दिन पूछि कइ? हर-बइल, कोनि-कोदा जे लगतउ से अगहन-पूसमे बइ देल करिइइ।

हमरा नीक लगाँ मोन नइ अहि बे कोना माएके राजी कइ लेलथीन मालिक आ कोना लिखा पढ़ी भेलइ। ओ दूनू कट्ठा खेत धरि मालिक कें भइए गेलइन। बदला मे धानक खेत के कहआ के अलँठाक ओ पुरनका निशान परजन्त नइ आपस भेल।

मालिकाइनिक ओहठाँ कानक कोनो कमी नहि। भरि दिन किछु ने किछु लगले रहइन। हम कनिको बइठी, से सभलिनिया कें नइ सोहाइ। ओ हमरा कखन दाबुत कहए, कखन भकोल। ई खबासनी मलिकाइन केर

लोक ओकरा मलिकाइनिक तरजी कुकुर कहइक। से, ओ मडगिआ जखन अमाच-कुवाच कइए, तहन हमर रोइआ लहरए लागए। कोनन गाल लीहि कें पड़ाए तऽ हम ओकरा लोहारी।

पड़ाति हुलनाइओ लोकक, तखुरीकक अहू मे हमर मुख देखइए। हम पाड़ीक मांहें दूध छीहि दिअइ से मलिकाइन के नइ नीक लगइन। तखन, खयास सँ अपन भैंसी दुहाऽ कलो तऽ हमई लेढ़िआ देखिअइन। माल रहइन हुनकर आ कूदि चलेत हमर।

माल दिनिएक मेल देइए की पाड़ी मेलइ गेलि, से से भइन बेचारी चुकरए! की कहिअ...हमर कोन साध? जहन धाना कोरसेसरक पूहे मोन रहइन तखन आन के की करितइ? मुदा एगो धाने कहि कइ छिअ...हम आ की सबूरी काका दुइइक दहितिऽइ त एहनू बेरबाद होइतइ? किन्नव नइ! नहिराक छलइन, नइ गलतरि। देखबामे पेश, सुभवानि पूटक थारी। दून बोहि पर बसुली बजबइत भगमान गोदक छलखीन। पूंजी मे चारि चारि टा लहठी, पाएर खाली। सूति-पाति से कड़कड़ करइत। खाजर पाहिक लगा-

बजार से तही मे उत्तर दिस ठाढ़। मकानक सरजमीन सीमहीसँ पछबर कएल। अकरा केवार लोसीक। चारू भात आकर आसारा। बथिजन-पूस कोनमे पुतली-चउरा, इसुगान ओक थाला गाकल। लाल पलकापर फहरबीक कजरा मइ ओर की सीमल, मड़का नाकड़िवला। पछवारि दिस बहरेबाक रस्ता, बहार हेमाक दरवाजा के बन्न क देला मन्ता एक दोसरे संसार। दरवाजा सँ सटले छोर पर दूटा कोठरी। सोझामे घेरल मइदान। उतरवारि काठ मालजालक घर। बीच मे काठक जनहर लादि, तकरा दूनू दिस-दू-दूटा खूटा। अने हटि कऽ सीमट केर लाल छोर। ई रहइ भैंसिक खातीर।

नइदक सेवा हरवाहे करइन। हमरा लिअना खाली भैंस। गाए एको टा नइ रहइन। अकरा सामरथ छइ से भैंसे रखइथ, गाए रखनाइ दलिद्रक काज।

हमरा मालिकक पट्टी मे नगदी केत अगा रहइन। हुआ मालिक बीस हजार बपइआ गाड़ने रहथ, बात सब होइत थी पूंजि, हुआ लोक तऽ से कहबे करइन। उपजा कोइन हजार मोनक। भादव-आसिन मे नगारक मुंह फूलइ, तहन हेबोढ़ा-सबइआ पर अकरा जते देयाक रहइन से देथिन। किछु बेचबो करइथ। नइदआ-पटेरी कइएक मेल के रखने छलइथ। एक घेर पूराने पूदन मिसरक मनोमाउ धान हेमऽ एकइन। अपने छथि छथि कऽ अपने रहइ। कहलकइन—तउलल छइ, भलिकाइन, सात मोनसँ बेशिए बनलइँ हइन, तइओ ओखा लिअइ।

गिरहथनीक हाथ थाकल रहइन। हमरा चाल पाबइइन। कहलइथ जे छीतन कामतके बजा लबहिन गऽ, तखनिओ लेतइ आर ऊकमे डारिओ देतइ।

छीतन कामति केवोट रहइथ। मालिक कहा हसेक खेत देने रहथीन।

बढ़िजना छलथीन कामति। बारहो मास लागल भिड़ल देखितइन। अंधेर-सबेर, राति-बिराति, समए-कुसमए जहन परोजन पड़इन, तइखन भलिकाइन हुनका बजबा लेथिन।

छीतन कामति एलइथ। उतरबरिआ लहकसँ तराजू उठइआ अनलइथ कोड़ बान्हि कऽ बइसला आर उठलऽ लगला—रामहि राम, राम...राम... रामः रामहि राम, राम राम दुः रामहि राम, राम राम तीन... की बीचहिमे बराम्हनी नजरि नचा कऽ बजलइ—ऊँ हूँ, कामति, ओ अइआ कहाँ थिकइन हे। कने ऊठपु, तकपुन गऽ।

ता ओमहरसँ गिरहथनी थिहुलता जकाँ चमकि कऽ हड़-हड़ली—बेस, आब छिए ने सुकल! तखन अनपुर्ना-लछमी कहिकऽ, अनकर पाएर नइ धने रहिअइ आ कऽ। बेर पर काज नहि देने रहिबइ हम तऽ सऊँसे गाम के बरम-बध लगितइ! फेर नहि मादव अइतइ?

ससोमात गूम भऽ गेलइ। आन उपाइओ तऽ नहिए रहइ।

धाम उठलल भऽ गेलइ, दू पहेरी ऊपर बात मोन भेल रहइ। बेचारी के एक पहिआ धान फेनू लाइऽ पड़इइ।

अहिना एक बेर करिमचकाके लेबो छिलमिलाइल देखने छिअइ। ओ हरबाह रहइन। बोनि देयामे से गड़बड़ गड़बड़ करथीन से हो ओहिना मोन अछि। पूसेक जरम रउदा देखा कऽ बोनिवला धान उकमे रखबा लेथिन। तहन हिनका ओसऽ एकटा बात नीक बनल्मे रहइ जे बेगर्ता पर उपइआ दू कइआ लोक के भेटि जाइ, दस-पाँच पनरह-बीस सए ककरो घूरऽ नइ पड़इ। एहि मुरा बड़ कहा। बेढ़ पाइ कमलन, कटलन हुइओ पाइ ठेका देथिन।

बर्खा दू-एक अकार बइमाख चितइत चितइत हमरा अबारमे लहिआ महए

जाइ, आध समए पर बर्खा नइ होइ छइ। रोहिणी नक्षत्रक मे पानक कोश मे ठाम ठीम बाध पेल खसलाइ बहिया। झिरझिरा-अरदरा मे अगला रोपनी समयम नइ जाइ। सामान्य पुरनिमा धरि धनहर खेतक कनिको ठा कोनो कनेक खाली नइ रहइ। जराइ समारल भइ जाइ, ओहुमे गइम धइ फड खेतिहर निश्चिन्त भइ जाए। वृष्टि, गन्हड़ी काटि कइ ओइ खेत मे खाउक राशि लेअए तइत दलान पर बइसिकइ पचीसी खेलाए।

हमरा सबक परोहनि नहरि नहि छइ। अकनमरि इन्द्रे भगवानक भरोस पर खोप निमहल जाइए। कमला महधा हँसबइ छथीन त पहिने कमलिनी छथीन बेस।

रोपनी आर कटनी काल मजिलाइन नइहरसँ अन महावइथ। बाकुलि राखइ नइ विभिन्नइर रहथीन। टामाइ कनी दूर पर मुसहर टोली रहइ। गाछ माथ, छोट छोट झोपि, दिसारी जन नाक आ ठेहुक रंग छोडर जकाँ सूदा इमनदारी आर मेहनति मे मुकहरक मोकबिला आन कोनो जाति के नइ कइ देइ नन्हाजी अंगे अन्नइ नहिए पचइ। बोकरा आइर पचीस बीस समाइ कुल हसल। छुट-छुटक कोना त नहिए देइइ। घर-घास मे दस-पाँच टा नमहर बखरा आरा बनइ। अकाइ-माओन मे जन-बोनिहार नइ दूनइ लोक कें।

खेतीक ठाम रहइन त मजिलाइन नाइकचें भइ जाइथ। दाइक-नाम, तइ पर सँ अचार फोड़ा.....आइर खूनत जाइ, बरहकी बइकी गो टोकना चढ़इ, डोल-डोल खालीन-खालीस आदमीक लीला लगइ। गाड़ीर सितलपाटी पइ कइ तइपर तइ केराक पत्ता बिछा देल जाइ। ओइपर भात आ टोकना मे दाइल। चउरागे तरकारी, कलिआ मे अचार। बीच बाथमे बाम्हपर गाड़ी ठाढ़ होइ। जइम आइर मासिक मोसाबिक पराक पराक पतिआनीमे

दूनिपर बइठए, खीसन केराक पत्ता पर अन परसि देथीहिन। सरकारी आर अचार देइ। जइम सबे भरि पेट छूरि लेअए तखन फेर रोपइ लागए।

मोन तइ होए हमरो मान रोपबाक, मुदा काज एम्हर नहि जेल रहइ। भैंसी आब एक गो नहि, दू गो रहइ। भिनसर चराकइ बूरी त बथान खरबी। गोबर काछि कइ एकठाम जमा देने जइआइ, निकोस दोसर ठाम। गोलाहा जगहक थाल काछि दिअइ। ऊपर सँ पथिला भरि अलुआही माटि पसारि दिअइ। अइ तरहे भैंसीक लागइ कें हम नक्ख राखी। गिरहथनीक भाइकेर घोड़ा रहइन, बेकरी लिही हमरे उठाबइ पइए। लादिके घा-घा कइ पथिला राखी। दलानक अकनइ खरहि दिअइ। खवासनी कोनो ने कोनो काज मे अढ़ांनहि रहथ—हतमनि ला, दीकान ली, नूआ खीच बहीन, फल्ली के लोर पाड़हिन, मसल्ला पीस, दक ने पइस, धान बहार कर, चिट्ठी खता अबहीन, पत्ता काटि ला, पीठ खूनि बहुन, बुलुरकें बुला जबहुन ..... देखहीन केवल पतली खरहइ छइ कलम मे, सुनइ छहीन बखारी में कीडन ठक-ठक लइइ छइ.....खवासिनिया मथमहि रहए हमरा सहरिकाल ! ने इए गो, ने बीस गो, रही त बलचनमा हम एक्के गो। मुदा ई बात छुनिहार ओइठाम केओ रहबे ने करइ।

अइ खवासिन केर कोखि जरल रहइ, पिआ-पूता सुनइ छिअइ भेबे ने केलइ। छरकलही गाबर केहेन बीच। आर गबइत-गबइत खिखिआ उठइ, खिखिआइत ठोढ़ि पाड़िकइ कानइ लागए—

नास हू नास पर अहिना ओंकरा भूत लगइ। पहन खन खरपए, खन कूदए, खन ठाम ठोकए, कोंचा खोंसि क नाच्ल भइ जाइ, जीह बहार कइकइ खिखिआइ.....हम काली मइआ थिकहुं, बुढ़िमा पीरदिपर के पुलरिक गाछ छइ तहीपर रहइ छिअइ.....जोका छागर चढ़ा, ने तइ सइसे गामकें

भूजि कऽ खा जेनइ... ..

मलिकाइन हुमरी मोनमे कबुला करथिन, देशक्रिक अगरा आर जोड़ा खागर से कबुला करथिन। हमरा कहथि, दामो ठाकुर के बजा अनहुन गऽ। दामो ठाकुर सानतिरिक रहइथ। झाड़ फूक, पूजा पाठ, टोना टापर सब जनइ छलइथ। आलक रंग मे रंगल धोती तहमी पेनइथ कपार पर सिनुरक बड़की टा ठोप। ठीक बड़े बड़ छलइन जे पोथि देखापर पाछू दिस डाँड़ धरि चल अबइन। हाथी दाँत के बनल माला गे लाल रंगली मे गोथल दू टा मूड़ा, आर देखा दीच मे बड़की मा बराबर। छहीक मूड़ा सननबरक मुँह सन रहइन।

दामो ठाकुर गाम मे बहराइथ तऽ धिया-पूता आगर के बड़ डर होइ।

ठाकुर आबथि दक्षिनवरिया घर मे ढुकर आसन अनइन मलिकाइन ओकरा नई अबथीहिन। बड़का मालिक बेटो जमकला रहि रहइ, आर सोकों नई अबथीहिन। देखा सुनब मे दुनर्वर, काढ़ न ... देहे थोथि से एहना पामर गिरहथनी ओकरा बजा लेथन। ठाकुर ओ पुछथीहिन, ओकरे अइथीहिन। मूसक बोहार केर माटि, तीन अर्थक ... पूजा, चारि ठोप गंगाजल, दोन माथक सुखाम पर ...एहे ... ठीक बजल मिथुन क दामोठाकुर खबाबिनके झाड़ कइथि।

मलिकाइन ओकरा कीचा मे बसि क नेंठ द देथिन। छीतन आर कल्लर धड़-पकड़ि कऽ ओकरा ठाकुर सम राखि अबथिन।

तिद्ध जो मनतरा मनतरा खबसिनिआक देह पर फुर मारथीहिन आ माटि फेकने अबथीहिन। हुनका ओकिक इशारा बुझल घेरी हमरा आगर घर खाली कऽ दिअइ, रहि जाइथ ठाकुर अपने आर खबासिन। केवाड़ बन्न कऽ कऽ बहार सँ जिञ्जिर चढ़ा देल जाइ। भीतर सब झाड़-फूक खूब

देर धरि चलइ।

कतो काल बाद भीतर सँ केवाड़ ढकढकाबथीन त एम्हर सँ जिञ्जिर खोलि देल जाइन। पाने-पसेमे भीजल सिद्ध जी बहराथि आ कबथीहिन जे नइ अवरदस्त भूत छलइ हम खबासिन केर, कोना धरैने देह छोड़लकइए से हमही जनइ छी .....आँखि त बहराए नइ देखुन एकरा! अमकला, ताकुति रखि-हक कने!

भूत लगइ त खबसिनिआक तहे पऽड़ि होइजे पऽड़ि भदबारिमे कमला-बलान आउरके होइ छइ। मे लाज-धीज, मे डर भर, मे मान-मर्यादा, मे थिरी-सम्मन, मे मेआन-परान, मे मैत-मैत, मे डर-ठेकान, मे थीर-थाम। बाढ़िक पानि तऽ मे आरि-धूर धुलइ। भूत की जिन बाँधे बड़की के देखलइ, थोकरा आउर के आन नइ बीहाड़ कइ से त बुझले बेतइ। वर्ष मे दू एक बेर मलिकाइनिक आंगन मे हमरा ओकनि दे तमासा देखबेटा करी।

एक बेर गिरहथनी अहिना ओकरा घरमे बन्न कऽ देलखीन तऽ भीतर सँ लगलइ केवाड़ ढकढकाइ.....तइन अनन्त बाबू बजाल गेलइथ। हुँ गिर-हथनीक भिसिअइला खलखीन, बेस हुनगर, बेस मोट डाँट! केहनो बदमा पोइराके अनन्त बाबू पानि पानि कऽ देथीन।

हुनू तिल धऽ कऽ केहनो मरखाइ साँड़ के ओ सए लगा पोंछा देलि अबथीन। से, मलिकाइन केर परताप सँ ओइ बेर सूतोक सबे हुनकर लटा-पटी देखल। यही कालपर बजारइ देखकइन।

गिरहथनी बेशीकाल हमरा आउर के भूतक ओ कुरती नइ देखइ बइए। खबसीन के बहु लोकक बाहा मे भूतपिशाचक सारेत चारि गुन बढ़ि जाइ छइ। झाड़वला के खबसिनिआक संगे अवगरे छोड़ि देथिन ओ, जोतोरी।

तिनिए चारि वर्ष मलिकाइनिक काज हम केने हथम की बाबी नहीं नोर

बेराम पड़लि। ओ रोग ओकर जान नइ छोड़लकइ। पेटक बेमारी एक दीस, सोसक दोसर दीस। पुरनकी माड़ी अंका दादी-पेहक ईस-कीस भइलइ, तपदर सँ ई बेमारी तऽ आकर [illegible] पीछा छोड़लकइ। जोना गाम मे कतरी किछु होइ तऽ मधुबन्नीक सरकारी असपताल सँ दवाइ लऽ आबए। बाबू भइया आइ [illegible] सभी खोली होइ तहुने दागदर [illegible]। अहाँ गो हृदयेश रहइ ओकर फोन, दू टका ग्यारी भाड़ा। [illegible] दाग ऊपर सँ। बाप रओ। हमरा आउर से पथ-पानि सेहो नइ चुमए बेरपर, कइऽ सँ अधिक दागदर आर कइऽ सँ दवाइ।

गाम मे एकटा बइदजी रहइथ, फतुरी मिसर। जे माथि कऽ देखलखीन। बाऽ-दस पुड़िया दवाइ देलखीन। परन्तुमे एक [illegible] दाहरी हमरा लऽ दाउन करऽलइथ। भादव रहइ की मे। रउदामे पित बगाड़ि गेल। दादी के रोटी-लोहारी नइ पचइ, अइगोल भात एक बाटी खाइक। सुधा चमे चाउरे नइ।

मकिला मालिक राति के हमरा सँ जँतवइथ, [illegible] बड़ी बेर सुधा लगवाइथ फेर दोसर करोट फेरइथ। कतेकालक बाद छुट्टा पाबी। कए बेर कइने रहइथ जे बहन जे [illegible] मे लऽ जइहएँ। [illegible] भरोस कर फेर भोर चाउर भइलिऐन, एक दिन तऽ सुधा [illegible]। पाछू पाछू, [illegible]।

माए बाबोलर एकमुट्ठी चाउरके [illegible] राइन्ह रइ।

ऐठे मधुका भात अबलम रहइ, सुधा से सब दिना नइ। [illegible] पालकीमे पड़ल पर [illegible] अबइ, मधबारि से मधुनाइ करए लए नइ ने बहराइए लोक। [illegible] बाप मे [illegible] बनेक कर मलाल लिकइ जे बहल।

हमरा पलखतिए ने हुमए बेरपर दवाइ आनि दिलिअइ तसबो नइ।

दादी के हमर यइ आबेस, हमरी ओकरा खातिर जान जाए। चरवाहिस पहिने धरि हम ओकरे बोलि के गेरुआ बनाक सुतइत रही। केहनो चीज दादी ऊपर सँ लाबए तऽ तइमे सँ किछु हमरो अबस्से पइर लागए।

सुइत तइसँ दू दिन पहिने ओकरा गोल मेलइ माइक लागा लके भात खइलक। सुधीक ओतऽ सँ मनसी आनल बुढ़िया पोखरिक दक्षिनबरिया मोहाड़ पर सुतलीक ओढ़ने लगाइ ठिकिबीकइ। चाली गाँधि कँ बोरि देलिअइ—पाछ मनसी गोसैंजाक नाम लऽ कइ। नवरि छल तरेंहा हिल।

मलिकानक क्यो अइ पोखरि मे बकरी मनसी लेसाइत देखइ तऽ गारि-मारि-फजहतिक अन्त नहि रहइ तकर।

कनिएँ काल बाद तरेंहा हिलइइ तऽ ध्यान-परान हुअए माथि कऽ ओलिक इनू डिम्हा मे मोस्तेद!

लगी छीपल त टेबराक दरसन भेल। बोरी गाइक डारि-पात मे ओकरा गेलइ। सोधरा लेल तकरा। तइन मनसी समेटल। गलफड़ ओ मुइपाटें कृषिक डाँट पइसा कँ टेबरा कँ लटका लेल। धूमि कऽ आकन अएलइ। माए माछ पकइऽ लागलि की बीचहि मे खवसिनिआ धुमि गेल।

हाथ चमका कऽ बाजलि—चलइ ने, आइ त हुमने करबइक जे इन्द्रिया पोखरिक मछरी केहन सोअदगर होइ छइ।

दादी ओहान पर पइठि रहए। खवसिनिआके बरबरी सुनिते देरी ओकर बोलि खूमलइ। अन्हार मानिमे जेना खद्योत नजरि चमकइ छइ तहिना दर्शक भइल ओखिने डिम्हा चमकइ। कइल जोड़ि कऽ ओ चुप रहइ कहलकइ खवसिनिया कँ। हम माए के बुका देलिअइ जे कोनो अन्देशा नहि।

खवासिनी आगाँ आगाँ, हम पाछाँ पाछाँ। मइका मालिकक पछबरिया रोनहलाक अड्डा दने बढ़ल रही।

मनासुरले पाछाँ घूरि कऽ ओ हमरा सुम्मा लऽ लेलक आर पँजियाय झाँगलि की देखिअइन तू आपइ। माटि कऽ पड़ा गेलिअइन।

ओइ दिन साँझखन गिरहथनी अमन्ह बाबूक हाथे हमरा माटि लिअबलथि। तहिआ सँ पहिले अइ पीनपर कइनी नइ मजरल रहए;

एकरा सेहरे गाँव दादी मुँह बाबि देलक।

हमरा आजर मे पहिने तेहरीक रेवाज नहि रहइ। गइर मे अलरेज राज करए, देहात में जिमिदार। मनन सँ लऽ कऽ सराध धरि डेग-डेग पर बामनक बृति चलइ, बात-बात मे पतिआ लिखबक पड़इ। एनहिक सभ छोटका जातिक लोकसँ अधनइक डंड असुलथीन तहिआ।

चरबाहि बड़का मालिकक बेटा जोरे पटना रहइ छल। दूनू गोटे बतारी रही। कोलेज बन होइ छुट्टीमे, तो अबथीहिन तऽ हंसी आबए। फमीज निकाल पेन्हए, पक्की बोली बाजए कखखन कखखन। बलबलिआक ई बगइ-बाइन हमरा बेस बड़िआ बूझि पड़ए। सेहन्ता हुलए जे पटना देखितिअइ कनी।

लाज उगिरो लजइ परलक भऽ गेल रहए। चरबाहि नहि सोहाए, मिलिओ मरि।

माए आ रेवती कहुमा अपन निमहए। खुद्दी-गुड़ा, मड़ुआ, कोदो, साँग-पात...कहुमा अपन खेबने बाए। धान कूटइन, चूड़ा कूटइन, चिआल पीस बइन, घर आंगन बहारि लीपि बइन, पोठआसँ सब्बोदा-बारी आनि दइन। अइँठ-कूठ उठबइन, बरतन बासन मँजइन, पानि भरइन। कखखन कखखन आँति पीसि बइन। अइ सब काज काल रेवतिओ कें संग कऽ लइ।

०

२

गिरहथनीक मालिन पटनामे रहइ छलखीन। होटल मे खाइत हुनकर पेट खराब भऽ गेल रहइन। एगो लाइनी के लगता रहइन हुनका। अइ लए कोनो पलठास, कोनो चलाक सोलकन्ह केर जरूरति नहि। आर, ओहेन आदमी बेसी बेसी दिन रहबो तऽ नहिए करितइन।

हमर अवस्थे नान्हि टा रहए, देहक साँचा नइ छोट रहए। सुनल अछि जे बाप-पितामह हमर छह हाथक लहासवाला छल। माए पिढ़सिआम तऽ रहए मुदा मुहि नइ छलि।

मखिकाइनिक मालिक दखनीक तातीलमे आएल रहथीन। पाँच-सात दिना खलखीन। पइघ पइघ आँखि, ठाढ़ नाक, चाकर कपार—बेस खाए-खुल रहथिन। सोभावक मधुर, गप-सप काल कनेमने मनकाह।

पहर दिन उठइ तऽ हम पास छीलि कऽ पूरी। तरुआल ओ हमरा इबेलीक भीतर बथा लइथ। नहेबा सँ पहिने मालिस ओ हमरे सँ करबइथ। देह बेस सुथरार रहइन। रोआँ सेहो सुलकी खसइन। चिकनइ लगा कऽ हम हुनक गत्तर गत्तर दूहि दिअइन। चानि पर कड़ूक तेल नइ, कोनदन लाल तेल लगबइथ। बेसरनजन की भिरिंगराज, मने कीदन नाम रहइ तेलक। हमरा मालिस-वालिस तऽ करए आबए साढ़े बारस, तहन चिकरक लानक

सोइया के जेना मोहिलाइन पुछिलइ छुइ तहिना मुँ [illegible] रहिलइन कडे कालधरि। कहइथ जे बड़ महिमा लगइलए रखो।

एक दिन मालिस केलाक बाद पुछलइथ जे पटना रहबैं हमरा संगे। सहरमे मोन लगतइ?

मालिकबला फटलाहा गमजी रहए देह मे, मारवे छेदे रहइ ओइ मे। पेटक सोझाँ एगो छुइ मे अधुरी पुरिअइने हम मारी छगुनता मे पड़ि गेली की कहिअइन की ने कहिअइन, हम की जानइ गेलिअइ जे एहेन बात क पूछि देता।

तइओ कहलिअइन—मलिकाइन के पुछिअइ सरकार हमरा पूछि कइ की होत?

अइपर ओ कहलइथ जे तोहर माए सँ राजी भइ जाइ तइ पोसी के अपन हम बुझा देबइन।

बुझलहुक हमो माइ भेला सँ केलइ। माए हमर घट हनी तइआर भइ गेलइन। गिरहथनी के सेहो मोन पड़लइन।

मलिकाइन अपनामठोला के फूल बाबू कहथीहिन। सभ हुनका सँ कहइन। हमहू फूल बाबू—फूल बाबू कहइ लगलिअइन। सुरिआ दोस हनी तनी [illegible] बड़ दोस लगइन [illegible] फुलडाली सँ सिंगहारक फूल खसल जाइ छइ।

फूल बाबू अपना पीसीक लोकना लाल मे दू-एक खेप अबइसँ अबइथ। हमरा माइके हुनक सील-सुभाव गमल रहइक। ओ चंगेरा भइ कइ कइएक बेर हुनका ओइ ठाँ जाइत अबइन। नहिरा सँ मार-बार अबइन तइ गिरहथनिओ चंगेरा-चंगेरा पठबिते रहथीहिन।

जतरा दिन जिलकन्ठ दखि कें फूल बाबू अपना गाम गेला। एमहर

गिरहथनी के चरवाहक फिकिर भेलइन। ओना कइथीक तइ छी जे मर, चरवाहोक कोनो घटी? एकटा जेतइ तइ एगारहटा आबत! मुदा कहया मे की लगइ छइ? मनुख मनुखके थीक। हाथ-गोड़, नाक-कान आँखि-मुँह सब जानवर के रहइ छइ मुदा दिमागि मनुखके टा के होइ छइ। भैंसी चरावइ की गाए, बकरी चरावइ की भेड़ी, अखिल तइ चाहथे करी कलीनमी। अहिना भइ अइतइ ई काज तइ बइदे ने [illegible] चरवाह होइतइ खरबूज-खीराक खेटमे लोक खुट्टा गाड़ि दइ छइ खाड़ी मे चूनक चेन्ह सँ आँखि-नाक-मुँह बना कए तकरा मजगूत बइ छइ ओइ खुटोपर। दू मुट्ठी गुलाल घास तइ कइ हाथ-गोड़ बना दइ छइ। मुदा ओइ नकली रखवार के कोइ पुछितो छइ? मनुष्यक बच्चा टेप-टेप नइ थिकइ जे जखनि मोन भेल तखनि सँ उठा आनल।

से, मलिकाइन के मोहिलल भइ गेलइन। चरवाह भेटबे ने करइन। दिन दसेक बजरुआ छीतन, तहन आ कइ एगो बूढ़-बहीर दुसाध चरवाह भइ कइ एलइन। हमरा भैंसी छोड़इत बड़ अफसोच भेल। मुदा अपन साथ तइ किछु रहए नहि। तइओ बुढ़वाकें सबटा बात बुझा सुझा देलिअइ। दू राति संग रहि कइ भैंसी सँ चिन्हारए करा देलिअइ।

पखेर बार हुराहुरी एक्के दिन होइ छइ। सकरा बिहाके हम फूल बाबूक ओइ भग जाइले बिदा भेलउँ। गिरहथनी छीतन के संग कइ देलइथ। माए दू दिन पहिले सँ लोर बहबइ छलि। आँगन सँ बाहर भइ कइ गोड़ लगलिअइ तइ ठोढ़ि पकड़ि के कानइ लागलि। हमरो कोढ़ फाटल तइ ठोर कानइ लागल, आँखि नोरा गेल। मुँह सँ एको आखर बोल नहि फूटल। मूड़ी गोसने अपन पेड़िया धेलउँ।

बाप तइ हमरा लेखे कहिओ भेबे ने कएल। जा धरि जील ता कहिओ कलकत्ता, कहिओ ढाका, कहिओ मलपरइगोड़ी तइ कहिओ देनाजपुर।

कपार, नाक, मोंछ आर कान, ओकर एतबे हमरा मीन अछि। माथा बड़की नो रहइ। दादी गइले दाखिल छलि। ओकरे कोरा मे ई देह पोसल पालल गेल। नाए सहिया कहबो करइ जे देखनी ओकर थिरइ आर हम छिछिआइ पुड़िआकेर

मधवन्नी सँ लभोड़िआ गाड़ीपर गेलिअइ। छीतन के देखला सुनल रहइन। मुन्हारि मोंक खन हमरा आउर फूल बाबू ओहिजग पहुँचइत गेली।

ई फूल बाबू गिरहथनी के अपन भातिज नइ रहइन, महमातरे भाइक लड़िका रहथिन। मलिकाइनक बापके तीन गो बिआह। पहिल बिआह सँ कोनो बेटा बेटी नइ, दोसर बिआह सँ फूल बाबूक बाप, तेसर बिआह गुनमन्ती देवी अपसरा लेले छलथीन। ई हमरा आउर के गिरहथनी कहलन। जथा-आज सभटा फूले बाबूक बाप के भाग मे पड़लइन। मलिकाइन के बापक धन मे सँ दसे बिघा जमीन परि लगलइन। बापक-भत्री आउर के ओहिजग बेटा अछइन बापक धन मे बेटीक कोनो हक नइ। जे भेटइत से हथ उठाइए भेटइत। बेटी जा कुमारि रहइत, ता खेलकइ-पिलकइ, सब सिंगारकेलकइ। अइ सँवारि किछु नइ

तइओ भाइ बहीन मे कुमाय नइ रहइन। फूलबाबूक बाप त जनमिक लेल जान देथिन, एहन भाउजि नइ देखल।

छीतन भूरि कइ गाम चल गेला।

तीन चारि बिदुका बाद छठि-परमेसरीक परसाद मुँह मे दइ कइ हमरो आउर पटनाक जतरा कएल। गामक नाम रहइ लखनउली। लखनउलीसँ लभोड़िआ तीन कोस उत्तर, कने पुबाहुत बएलगाड़ी पर अबइत गेलिअइ। बसु-जाइ सभे बेसी नइ रहइन। एगो सुटकेस, बिस्तरबन्ना होल्डाल, छोटकी टीन मे घी ....ई सब तइ रहबे करइन। एकरा अलावे पथिआ मे चूड़ा, ठकुआ, खजूर-टिकिआ भरल रहइन। कैराक एन्ना मे लमेटल अचारक

पाछा सेहो ओहि पथिआ मे। एकटा झाली कपरसँ दइ कइ पथिआ सावेक बड़ सँ नीक अर्थात मान्हल रहइ। बन्हली छुनली रहइ सइमो पथिआ मइमह करइ।

टिकट-सिकट मालिक अपनइ कटबलखीथिन। कनी काल धमिकइ भपटिआइ बिसलँ गाड़ी एलइ। मेला ठेला नइ रहइ तते। महलमानो रहबे करेन। लोगि-बिलिकइ मोटा-मोटा चढ़ा लइत गेले।

गाड़ी फुसलइ। समुद्रिआ तहन झंझारपुर, तखनी सनीमाझी, तकरा बाद सकुरि। सकुरि मे मेल खेलनइ गाड़ी। दोसर जाइत रहइ घंटौक दिस, तारसराए सँ आएल रहइ। दूनू गाड़ीक ऐंजन पानि से हो सकुरिए मे भेलइ। फुलबाबू उतरिक कहरा एनसँ ता गप करइ चलइथ।

ऐंजन पुर्जी देलकइ तइ मालिक गाड़ी पर चढ़ि गेला।

सकुरी आर दरिभङ्गाक बीच मे एक्के गो टीसन पड़लइ तारसराए।

दरिभङ्गा जक्सन के हड़ाही कइए छइ लोक। जइठाम बड़ी काल गाड़ी ठरा रहइत। हम ताबेमे उतरि के लभी गइ एलो। मालिक प्लाटफारम पर टहलइत बुलैत रहलथि।

पछिले पश्चिम हड़ाही टीसन हम देखलिअइ। एते लेन, एते रेलगाड़ी, एते ऐंजन पहिने कहाँ से हम देखबै। आधा कोहिक कारी कुर्ता पहिरने कुली बाजार। झाली रक्षक कोट पेन्ट पहिरने टी-टी-ई। मोसाफिर सब सेहो किलिम किलिम के कपड़ा पेन्हने।

हड़ाही जक्सन मे दू टा प्लाटफारम छइ। अइ पारसँ ओइ पार माइलए बड़की गो पूल से छइ।

जादे ठाढ़े लोक सँ हबर-हबर सोहारी-तरकारी बिकइत देखलिअइ तइ नइ अजगुत लागल। मेल से खोचोरी, बइठि के किए ने खाइए! गोली से

कए तरहक सुनिअइ।

एक गोटे कहीं खपलाहा कागज बेचैत रहइ। बाबू ओकरा सँ ऊ कागत किनलइथ। माहाँ बुझलिअइ जे लोक ओकरा एखबार कहइ छइ। ओर मे दुनिआ-जहान के खबरि छपल रहइ छइ।

एगन पुक्की देलकइ आर सुसुआइ लगलइ त फूलबाबू गाड़ीपर चढ़ला। लगेमे आबि के बइसला। जइठा सँ गाड़ी खूब रेस कइ देलकइ। नीचाँ पहिआ हड़ाक हड़ाक करइ। कील आ धूरी मय हीलइ त हिब्बा आउर ढब्बर ढब्बर मारइ। ऐगन कड़कड़ काली कड़कड़ काली करइ। भीड़े मे एक गोटे पुछलिअइ—गाड़ी एना किए चलइ छइ?

ओ कहलक—पहिले पहिल गाड़ी चलबए लगल अ ड्राइभर बहादुर के गारी लोखिल भेलइ। काली माइ टकइइ ने देखीन। छोटा लाट अपना देखलक जे हए जाइ। करिआ छागर कालीजीक चाहिएन। तहन क कलकत्ता मे टिलिगराम कए देलकइ। एकरेंघर एए जोड़ी करिआ छागरके लीनिक पिलखीन से काली माइक जीह चारि आङुर छोट भए गेलइन। तहिए सए ऐगन काली माइक जै-जै कार करइत चलइ छइ कड़कड़काली कड़कड़काली कड़कड़काली.....सुनइ छइक? ताफे त कहइ छइ!

ई बात सुनि कए एन भड़ गेल रही। आब कोइ ई बात कहत त पतिए-नइ, सुदा मोहि दिन तक मोहइ आना सोच धूकि पड़ल।

गाड़ीमे देह लेना ने हीलइ लागल जे की कहिअइ, हुए जे गिरइथक कलमने मचकी फुलइ छी! कनी काल बाद आँखि कपा गेल।

भला सँ निन्न टूटल त गाड़ी समस्तीपुर आबि गेल रहइ। ई जकतन त दरिभङ्गी सँ पइथ।

अइ बक हमराआउरके गाड़ी बदलेके रहए।

हमर विचार नइ रहए, सुदा फुलबाबू जिद्द धेलइथ जे एगो कुली कइए ले

कुली बोझ उठबलक। ओ बला ठीन इस लेली। पुल परसे ओइ पार पेंलिअइ।

प्लाटफारम पर मातें लोक। किसिम-किसिमके चेहरा-मोहरा। किसिम-किसिमके पहिरन-ओढ़न। बोली बानी मिझड़ाएल।

माटा छोटा बाकस-बिस्तरा नीचाँ धेलक कुलीया। गाड़ीमे बिलम रहइ। कुली अपन बाट गेल। मालिक कहलइथ—चूड़ा दहुआ माहर कइक। खाइ ले।

अही ठाम?—हम कहलिअइन।

मालिक कहलइथ—तइ, की हेतइ? देखइ नइ छही, कते गोटे तइ खाइ छइ!

ठकुआ गुइए टा झेलखीन मालिक, एगो पुरबा। खोलि कइ अचार। इसारा सँ बूका देलइथ तइ कल सँ पानि आबि देलिअइन। डोटी ओर सँ बइठले रहिअइ से चालोपर-कपारपर पानि पड़ल रहए, इधर-उधर पीछि नेने रहिअइ लइओ सुर्खल तइ नहिए छले।

लोक सातेक कुक्कुर आर तिन-चारि गो कलसर छओड़ा फुलबाबूके घेरने छइ। पइ तामस उठल। हाथ उसाइलीअइ तइ अही मना केलैथ। कुक्कुर आउर तइ जे ते सुदा कलरवा सन के अनधेर मेल जाइ, बीच बीच में ऊ आउर बाजे—"बाप रओ बाप, समटा खेने जाइ छयीन मालिक.....हमरा आउर ले नइ रइ देबइ, सरकार!....." एतबा कहइ आर कनबाक भगल करइ।

एहनामे कहुँ खाए-पीबल जाइ?

नई खाएल गेलैन तऽ मालिक पसा खोंड़ि कऽ छड़ि गेलैथ।

कसरमा सब अपनामे झुकुरे गाड़ी कटाउक करए लागल।

हाथ धो कऽ एलैथ तऽ कहलैथ जे तो गाड़िए पर सुतरएं।

कलीकाल पर कठिहारमाकी टरेन पसंद तऽ कुलिओ दबगइत आएल।

रेडा घेस खुलइ, मुदा हमरा आउरके अगड़ पेट गेल

ई गड़ी अमीनगाममे आएल रहइ, जाइ चलइ एलाहाबाद। पूरब भरसं कुलकी कमरिया सब अबइत रहल, छपरा-बलिया दिस अपना घर जाइत रहए। दू गोटे पहनो रहए जकर बोली नइ बुझिअइ। फुलबाबू कहलथ—ई बङाली थीक, पटना भाखामे बजइ जाइत। ओ हमर-हमर बङे के किछु नइ बुझथे।

मूड़ा फंकली, ढकुआ खेली। पानिपेने रही लोटामे, से पीबि लेली। तखन जे पहले से ओहि मनमिजर से हाजीपुरके बाद पिन्न इटल। हाजीपुर आर मोतीपुरक बीचो बीच हड़की टा पूल छइ। गण्डकीके अइ पूलपर गाड़ी एमइ तऽ सती ओर से हथहाइ लगाइत जे की कहिअ।

फुलबाबू हमरा कहलथन—देखही, वर्षिक्षन भर ओम्हर आरक पारमे एजोर से देखइ छहिन सएह घटमा थिकइ।

आरो होरी। हमरा मुंह से बहराएल।

बाबू कहलथ—मुदा गाड़ी तऽ घूरि कऽ जेतइ। एखन चारि घण्टा लगतइ!

एतनी दूर आइये चारि घण्टा?

तऽ, देखइत ने रहिन!

बाकहि मे सीनपुर आथि गेलइ। गाड़ी ठाढ़ भेलइ।

फेन कुली केलखीन मालिक।

घण्टा गाड़ी लगले रहइ। दुनियां ओहपर गाड़ कऽ बइसा देलक। राति पहरमे खाल होइत। गाड़ी चलइ तऽ ढकर ढकर बजइ।

पहलेमा पहुँचइत पहुँचइत किरिन फुटि गेलइ। सामने ओइ पार महेनए घाट।

नइसे गाड़ी खलास भऽ गेलइ। जहाजदिस धरोहि लागल। दूमि पइह जेना बीहरि से बहार भऽ कऽ लोक आगू मुहें ससरल जाइए। धक्का-बिस्तरा माथपर बीकने कुली आउर पसिंजरके धकियइत चलइ। हमरा तऽ अकबक किछु कुछे ने करए।

जहाज पर बइसलहुं। फुलबाबू बिस्तराबला मोटापर बइठलइथ। लोहक बड़की जे नाओ, तइपर काठक कोठा। इहे तऽ भेल जहाज। जहाजक बीचो बीच चाकर-चउकोर खाधि मे मातें मसीन, मातें कल-पुर्जा। लोहक तार आर जालीसं घेरल रहइ। फूल बाबू कहलइथ—जहाजक ऐन्जन थिकइ।

ओ तऽ जा कऽ बैसि रहला मुदा हम बड़ी कालधरि जहाजक ऐन्जन देखैत रहलहुं। एह, धन्न कही मनुक्खक मगजके! सोचइत-सोचइत विचारइत-विचारइत कलमे कल भिरइत गेल, पेच पर पेच कसइत गेल··· पथरकोइलाक आंच पानि गरमाइ छइ, ताहीसं भाफ तइयार होइ छइ। भाफेक जोरे जहाज आर रेल आर कल-करखाना चलइए।

जहाज पर बइसबाक बेंच-कुरसी नहि रहइ। धड़ किलाक मे माल जाल भऽ जकां जकरा जेना मोन होइ ओ तहिना कठए-बइठए। एखनारबला बुलि-बुलि एखनार भेलए। चिनिया बदाम बला सेहो अपन सभोदा बेचए।

ऐन्जनपैहक गोट-पातर टोंटी आउर खूम सुसुआइ। बहार मे जहाजक दूनू कात बड़का बड़का पंखदार पहिया घुमइत रहइ आर जहाज खरर-खरर

सरर-सरर पानि कटइत गंगा मइयाक छाती पर आगू बढ़ल जाइ।

महेनरू घाटक भेटीमें दू हाथ कराके अहाज ठहरा भेलइ। कुली सब समाधान कइ नाजायज मेलामें पहुँचल। उतर खलासी लोक रेही काँधे कांधे तइयार। अहाज एकभगाह भइ गेलइ। हमरा डर भेल जे प्लाट में जाइ।

फूल बाबू फेनू एगो कुली केलइथ।

तीस चालीस सीढ़ी टपि कइ ऊपर महेनरूघाटक टीसन रहइ। बकरा सम्हर टमटम आ रिकसा ठाढ़। सहिया साइकिल रिकसा नइ, हाथ रिकसा रहइ। खाली ओ रिकसा लदि भेल छइ। ओइमें दुइए गो चक्का रहइ आर आदमी दूनू हाथें दूनू बंटाक छोर पइ कइ ओकरा खींचइ।

मालिक एगो रिकसावालाकें ठीक केलइथ।

मछुआटोलीक भीतर एगो छोटछिमनी गली रहइ, वहीमें डेरा रहइत। रिकसा वालाधरि आनि गेलइ।

डेरा ई फूलबाबूक अस्थायी रहैन। कइकें रहोथ, मुदा भाड़ा ई कोबरि रखइथ।

मकान छलइ बलिआकेर। आधा में अपने रहए ओ। आधा पगड़ीने छल भाड़ा पर। बीच आंगनमें इनार तइपर सें छहरदेवाली। आधा इनार आम्हर पड़इ, आधा इमहर। इनू बसुका डोल चए दिन कुइआमें लदि जाइ।

भाड़ा रहइ छल छवइआ महीना। दू टा कोठली, अनघा, पएखाना। कनी टा अरजइ, दू चक्की ओकर ओवारा। पुरान केवाड़ीवाला दुआरि। ऊपर छपरा। कोठलीक फरस छइ पक्की, मुदा आंगन कच्चिआ।

बर्तन-बासन सभ टा रहबे करइन। महीना भरिके चाउर-दालि-नोन-तेल मसाला आनि गेलइ। दू मोन जारनि। एक डाकी चिपड़ी।

मालिक कइ अबइत रहए हमरा। कनी मनी जे मालूक छल से फूलबाबू बरनहि सिखा देलइथ। पथरकोइलाक आँच पर रान्हल दालि-भात इनका नहि सोहाइ छलइन। कोहारिकी नहिए खाथिन। एमहिआइ में पाँचटा बिसकुट आर गिलास भरि गरम दूध। कहिओ कहिओ हलुआ से बनबइथ।

दोसरे दिन मालिक हमरा निकर आर हाफ कमीज सिआ देलइथ। कैस छँटवा देलइथ नक्शा सें ...कलकी साबुन के टुकड़ी सें माथ मलि-मलि नहेलिअइ। नइ ने मानलइथ। कहलइथ—ई पटना थिकइ, गाम नइ

[illegible] । माथा के [illegible] बनओने रहथि [illegible] लोक [illegible] [illegible] । सहरमे रहबाक छुट [illegible] आदमी [illegible] [illegible] !

मालिकक [illegible] [illegible] मे ओर दिस हम [illegible] गुँह देखल [illegible] हमरा [illegible] [illegible] [illegible]

मउसी कें रखने रहए। बीरा गाँवे तहरिकाल हम बीकरा सीमाँ महतुत रहितिअइ। नकामवाली के बी बमारी नहि छलइ जे बेमारी लयतिनिमा के रहइ। लपकहि पइर ई अवस्से रहए। गप्प केनिहार केओ नहि भेटइ त हमरे सँ संतोख करइ।

मालिक हू गो पइसा हमरा रोज दइथ। हँ पइसा हम जमा कने जाइ। कथि में खर्च करितहुँ? घर-बरकारी आर दोसर चीज-बउस आनइ काल एगो-आध-गो राइ बचिए जाइ, बीरोक खर्चा ओही में चलि जाए।

पाम खाइत बहकी एना में कइएक बेर अपन मुँह देखी। सबकक कतबहि में लगैत पानक बीकान लगैत एना लाइ। जहाँ एना देखाइ पड़ए की हम डमकि रही। कोनामे लागो लाथे ओह अपन अपर देखितो एना में।

चारि बजइ की केनू जुल्हाक आरती करइ बेसी।

मालिक कहिओ कहिओ हमुआ अपनाँ पनायइथ। एक दिन अनबिते काल अण्डा फोड़िकें पीअरका रस मोंहमे ढारि देलखीन से हमरा बड़ कोनादन लागल मालिक कहलइथ—गाम पर नहि अनिहइन।

से किए?

फूलबाबू कहलइथ जे मुर्गीक अण्डा अपना ओमहर खाएन नइ खाइथे मुदा फाएदा बड़ करइ छइ। अहरेंजी पढ़निहार इस्कूलक लइरकेवाली खरपि क कालेजक अइनइ मे पाएर रखितहि अइ सबकथुक चर्चा चर्चा सुनइ लगइ छइ। तकरा बाद केओ-केओ हमरे जकाँ दोगाधारी चढ़बइ लगइथे ...देखितहि छैं... ...।

सुभाव बेजाए नइ बूझि पड़ए। ओना हम हुनकर टहलुआ रहितहुन; मुदा एहनकाक अनमना रोजो छलिअइन। हिन्दी अंग्रेजी बजइत मुँह दुखाए लगैन त हमरासँ अपना भाषा में बाजइथ। कहइथ—अही लेल

ई तोरा अनजिनए, टहल-टिकोरा लेल त अहूठाम आदमी मेटिए गइलए। तोरा लइले गप्प करइत रहइ छी त बुझी पड़इए जे गामहिं छी.....।

बाप किरांपन रहथीन। माय लाइलर्च। बापक दिल सँ खर्चा दिलाबे सँ मेटइन मुदा माए तुकाक खूब देथीन। दुइए चारि दिन हम हुनकर गाम पर धुल देइइन, मेलो त थाइ-गया नइ लागल, मुदा एतबा बुझा मे आबि गेल जे लगाबी निइनोक बड़ ओर छइन। जार-बजार मे दुसाध, मुसहर, चमार, कन्ध, कुनिमा, कुमरा आदिके छोट-छोट टोल रहइ। गाँ-बनिहार आदमी काहि पेट बेचने घुरइए, ताहू दिन पेट बेचने घुरए। भूखक लेल अतरी अंइठ लागइ त बाबू भइआ सँ चारि पसेरी अन्न आ की बुगो बइदआ मइन त। काम त चला देथीन, मुदा पाछाँ आस्ते-आस्ते लोहू धीच लेथीन आर चमड़ी चिबाक चिट्ठी बना देथीन। चुन्नू बाबू—नइसन नाम तइसन काम। फूलबाबूक मामा कनइली राजक तसिलदार छथीन। भागलपुर सँ रचिछन, बोकादिन चाकरी करइत जिनगी गुजरल मेला रहइन। एमाक ठाम लगा देने रहथीन। चुन्नू बाबू सूद-बरसूदक बर्ल बनौल जाल खूब बढ़ा मेने रहइथ। धनीक छाहे हिन्दू रहओ, छाहे मीमा, छाहे अहरेंज रहओ, छाहे जपानी- सब एकें जातिक होइए। गरिबहीके हमरा जनइत एकके गो जाति होइ छइ। चुन्नू बाबूक मिलरिया मारिसँ राहे टा नहि, बाभनो कइएक घर तबाह भइ गेल रहए। बेटा के पढ़बइ छलइथ जे जज मजिस्टर देथीन।

मुदा अपने इच्छे त सब किछु होइ नहि छलइ। बापक जे मोन रहइन वही मोताबिक फूलबाबू तइआर होइतथीन तखन की छइन!

फूलबाबू भितरे भितरे कलरंसिया मेल जाइथ छलइथ खूब एकबार पढ़इए। लोहर जाबर के लेकचर खूब सुनइथ। परका परका लीडर

[illegible] हुए आर [illegible] हुए हुकुम भएल ! बाकी पुरबला पइसी मैदानमे [illegible] कहिया भरी मिटिन होइ। फूलबाबू [illegible] मिटिनमे [illegible] नेल होएत। बात किछु नइ बुझिलइ, आते बाप लोक के अमा देखिक अजगुत लागए।

ओट बमैत छोकिएक मालिक [illegible] बुत्ता [illegible] [illegible] अबैत [illegible] अबैत [illegible] देखैत [illegible]।

खेला दीपक देही हक बाजि गेलइन। माइ मांसु आर अन्न छोड़ देलैथ। हमरा ने [illegible] है एकताह देख के बुझ हुए। किछु [illegible] हिम्मत नहि। अंडि झोल से फगुआ बितलइथ।

चइतक पहुआ आर बइसाखी। [illegible] देखि कें हमरा [illegible] हमरा नहि [illegible]। [illegible] लोक [illegible] दुइओ पतिअ नी लिखइ, अहम बोली राजा-देश हेतइ [illegible] मौन [illegible]।

चारि मासक बरमहा पठा देने खुलिअइ, आठ गो [illegible]। [illegible] दिनके बाद तकर रसीद देल। ओहा-निशान हमर माइएके रहइ बुझइ ओहदर, गवाही मे के दस्तखत केने रहइ से नइ बुझलिअइ।

चैतमे दू राति मालिक बाबा पर नइ एलइथ।

पुछला पर बजला—दीघामे [illegible] आसरम [illegible] गेलिअइ। हीत मीत लोकनि नहि मानलइन।

बड़का कवलेस सब मे पढ़ाइ कम होइ छइ, [illegible] बुद्धि देली। बरख भरिमे पांचो मास फूलक रहइ छइ की नहि, से कहनाइ [illegible]। फूलबाबू

बगल बुद्धु काज सम्हारइथ—पढ़बो करइथ आर कहरोसो करइथ।

गरमीक छुट्टी देखाएल रहइ। चारिए छ दिन बाकी छल देखइ। मालिक मोरे सदाकत आसरम गेलइथ कहले रहइथ—साँझुक पहर घुरबइ, एखन हमरानेल भानस चुनि कहिअए।

खिचड़ि आर आलुक साना बनइलइँ अपना लए। खेलइँ आर टहलि बुलि कइ बेर बितलइथ।

साँझखन [illegible] चुल्हा धरा देलिअइ। बड़ मोरसँ हुनिगा आलुक तरकारी कैली, टमाटरके मिठका चटनी बनौली। हीरसँ बाति [illegible]। तीन [illegible] खिआकइ [illegible] अंगठली, अचार नइ रहइ, [illegible] मकानवाली सँ [illegible] बनली।

आहि रे बा! बारह ठोकलकइ मुदा फूल बाबू कहाँ एलइथ। घुरि घुरि कइ हम [illegible] काल से आबि ठाढ़ होइ। पच्छिमसँ से कोनो रिकसा अबइ [illegible] गाड़ीकी नम्बरिसँ देखी, बड़ अनदेसा हुए। हुए जे की भेलइन मालिक के!

बाट तकइत [illegible] टहलइ [illegible] कोठरी मे आबि कइ पड़ि रहलहुँ। के खाइए के पिअइए!

[illegible] कोना पयनी सुना गेल आ नाक बाज [illegible] से नइ बुझलिअइ!

ओर मे मइन बाबू आबि कहलइथ—"मालिक त [illegible] गिरफतार भए गेलथुन, माला पहिरि कइ [illegible] गेल [illegible]। एखनए [illegible] बाबा ओगरवे चल, ता सब हमरा ओकर रह गइ। चीज-बउस अपन कोठरी मे बन्द रहइथन।"

मइन्याबू एते बात हमके बेर बाति गेलइथ आर कुरसी पर [illegible] [illegible]।

हमरा ई सब सुनिकइ अकबक किछो नइ फुराइ।

[illegible] बरखक अवस्था [illegible] होइ। मइन बाबू के हमर हालति देखि

कइ कलोट मेल हेतरन। मालिकक शिक्षकारी कइ बो कइ नहि कलिकइ आखि कइ कइ कीना बुझलिअइ ? एखनार लेखबार बन्दे भइ गेल रहइ आर हमरा कइ पढ़ब नइ आयइ, आरो अक्षर महीन रहइ हमरा लेखे नहन आगे बात नइ बुझने रहितिअइ कइ दू-चारि दिन अबस्से [illegible]

बड़ीकालकरि गुम्म रहलहुँ। तहन कहलिअइन—सरकार, बगियान मधवन्नी दिन केओ गेनिहार होथि आर महाँक जिन्हार रहए तइ ओकरे हम हमरा देश पठा दिअ ...कइ ठमा अगमर हम काना रहब!

अइपर ओ हथलइथ आर बाजला— धुर बतहा। तोरा लेखे केहने फूलबाबू तेहने महेनबाबू। हमरो आकर घरमे रहइ दिअइ, बोन मे पड़ा रहइ दिअइ। मास दु मास मे मालिक सहल सं बहरबे करथुन, तो अपने अगुआइ कइ।

महेन बाबूक ई बिचार चिरेता नाहित छीन बुझना गेल। हम सोचली जे बाबू कोनमि बड़ा मतलबी होइ छथि। दिनक नोकर-चाकर भागि गेल हेतैं हमरा पर एतेक जोर दए रहल छथि, नहि तइ मंगली मे कनरा मे अन्न-पानि देत केओ। तइपरो दिनका ओहिठाम दस दिन रहि देखबाक चाही। एना एसगर गाँव आमन कइ मलिकाइन खोंदि छोड़ि कए सबदा हाल जानि लेतीह। ई सब बात जखन फूल बाबूक माए-बाप बुझथिन तो हुनका लोकनिक मोन हरबड़ा जेतनि। मालिकक माए तो अन्न-पानि छोड़ि कए जान देबापर उतारू भए जयथिन्ह। ई सब अपराध हमरे माथ पर पड़त। बाप रे! ई तो भइ नहि सकैत अछि।

मोने मोन हम निश्चय कयलहुँ जावत फूलबाबू जेल सँ छूटि कए नहि औताह, तावत तक हम गाम नहि जाएब। महेन बाबू छीके कहैत छथि, तेहने महेन बाबू, तेहने फूल बाबू। बाजब भूकब, रहनाई तहनाई रंग-ढंग सब एके

छैन। [illegible] कठिन थल मे तूनू मे के घनैत हेतइ आ के बीस। तइ बुझ-पड़ ही गाई। अल्ली-बल्ली वसु जत ठीक केलहुँ आ अंगला-खिड़की बन्दिना भर्ती बन्द कइ देलियैक। अपन कपड़ा-लिलोना, लिट्टे-पिनसिल निकालि कइ बाहर राखल। मकान मे ताला ठोकि महेन बाबूक संग चलि गेलहुँ।

महेन बाबू बड़ा खुशी भेलाह। घरक विषय मे बहुत बात ओ बाटे मे हमरा सँ पूछि लेने छलाह। बाप मरि गेल। दाइ (आजी) मरि गेल। माए या छोट बहिन अछि। दू-तीन बरख तक महीसक चरोनी केलहुँ। ई सब बात महेन बाबू हमरा सँ पूछि लेने छलाह।

सड़कक बाहर बाँकीपुर मैदानक संग एक बड़काटा बंगली लाल रंग मे रंगल छलैक। ओ बंगले हमरा भीतर लइ गेलाह। हमर मलिकाइनक उमिर कें कनी नमहर महेन बाबूक माए पीढ़ी पर बैसल तिल मे सँ कंकड़ी बिछैत रहथीन। महेनबाबू हमर काम्ह पकरि माए, के कहलथिन—माए, ई फूल-बाबूक नोकर छैन। माँजी हमरा एखी सं ठियला भरि देखि बजलीह—फूल बाबूके ई कि सनक अलवार भइ गेलैन? गाँधीजी नीक बरक नेता सबके बिगारबाक ठीका लए लेलैन्ह अछि कि? पढ़ब-लिखब छोड़ि कालेजक विद्यार्थी सब आब नूने बनौते कि?

एते बाजि ओ पूर्ण भगवानक दिस हाथ उठा कए बजलीह—हे दीना-नाथ! आहाँ एहि नेता लोकनि कें बुद्धि दियौन।

नमहर मकान रहैक। बड़का-बड़का बारहेक कोठली छलैक। आँगन मे श्याम, हरसिंगार आ मेघोक काम छलैक। हम ओही काम लगक दिस एकर-बकर तकैत छलहुँ कि माँजी भनसिया कें तोरपारि कए कहलथिन—बाबाजी, फूलबाबूक नोकर आएल छैन्हि एकरो भानस हेतैक।

हमरा महेन बाबू लइकइ अपना कोठली मे अएला। अपन कोट उतारि

खुट्टी पर टाँगि देलथिन। कुर्सीपर बैठलाह आ इशारा सँ हमरो बैठए कहलनि। हम नीचा फर्शपर बैठ गेलहुँ। कोठली बाहर, आ नम्हर छलैक साफ सुथरा। एक पलंग, कुर्सी, टेबुल, किताब सँ भरल रैक आ कपड़ा टाँगए लला खुट्टी। पलंग पर चनमा जकाँ कपर टाँगल मुकहरी, पैर पोछक पायोश। ई सब बड़ बढ़िया लागल

महेन बाबू बंगाली छलाह। हमरे मालिकक संग पढ़ैत रहथि। दुनूगोटा मे बड़गाढ़ दोस्ती छलैन। मालिक के घर सँ भूजा, दही, अचार, सब खाएल रहथिन ताहि मे सँ आधा महेन बाबूक घर पठा देने रहथिन। महेन बाबूक माए-बाप सब हमरा मालिक कें चीन्हैत छलथिन। ओ लोकनि फूलबाबू कें अपने बेटा जकाँ बूझैत छलथिन।

बंगाली लोकनिक परिवार बड़ भरलपूरल रहैत छैक। हुनका लोकनिक घर गृहस्थी, लेनाइ-पिनाइ, ओढ़ब-पहिरब, सब देखबाली (बंगाल सँ पश्चिम लोकनि सँ भिन्न। महेन बाबू आठ भाई-बहिन छलाह। एकर अतिरिक्त घर मे माए-बाप, विधवा मौसी, दू नौकर आएल भनसिया, लकड़ा सब बाबाजी कहि कए ओर पारैत छलैक। एक बड़का एस्टेट छलैक हो भाई। महेन बाबूक पिता सिकरेटरियट मे अफसर रहथिन। आठ सौ रुपैया महीना पबैत छलथिन। बारह बालक पुरान नौकरी छलैन। बंगालक पाछू मे करीब दू बीघा खाली जमीन भेटल छलैन। आगा दरिसर भागक कोठल-घोटल छोटथिन मैदान-नीमक दू टा भूकैल छमैल दुआन गाछ। काठक छोट टा फाटक साहेबक मोंच पड़ी पर झिलल रहैन। हुसा नें बुकब सँ पढ़िने ओइ पट्टी पर छोहर आँखि पड़ि जैतह।

हुनका आँखिताम चारि दिन रहिकए हमरा मोन कें बड़ आंतोष भेल। महेन बाबू हमरा अपन चाकर बना कए रखने छलाह। केओ विरोध नहि कैलथ। नौकर के ओ मना कए देने छलथिन—आदर्श हमरा कोठली मे बलचनमा झाड़ू देत। हमर चाय आदर्श बलचनमे अइ टेबुल पर आनिकए राखत। हमरा धोती कें बलचनमे चुनिआयत। कहबाक तात्पर्य ई थिक जे विशेष मे महेन बाबू हमरा सराबोर कए देलनि। सुदा हो भाई सब, एतेक कहबी भला हम अपन फूलबाबू कें कोना बिसरि जैतहुँ

फूल बाबू बड़ा मोन पड़ैत छलाह। एसगर मे कतेक बेर करेल काटल, कतेक बेर आँखि भरि आएल—से कहि नहि सकैत छीअ। साइ दिन गांधीजीक बड़ ओर छलैन। धड़-पकड़ जारी छलैक। सरकार बहादुर दिस सँ कानून छलैक जे नून तब नहि बना सकैत अछि। गांधी महतमा सरकार कें झुकबए चाहैत रहथीन। अँगरेजी सरकार अपना जिद पर अड़ल छलैक। कलकत्ता बम्बईक गेड़ मजदूरक लोकनि तेहो भीतरे-भीतर गांधीजीक पक्ष लैत रहथिन। हुनका लोकनि कें साफ-साफ देखए मे अबैत छलैन जे लोराक मेला पर सबसँ बल्कि नफा हुनके लोकनि कें होएतैन। सरकारक झुकला सँ लोराक आ लोराक मेला सँ जेसी सँ जेसी कल-करखाना फोलबाक अवसर, तब हुनका लोकनि कें स्पष्ट देखाइत छलैन। अखन जे देस के दूहि कए अकरैन कए आइत अछि से लोराक मेला पर तब हमरे खजाना मे आबए लागत...सन तीस-चालीसक जमाना रहैक। गांधीजीक हुकुम सँ बाबू लोकनि गिरफ्तार भए रहल छलाह। हमरा फूल बाबू के तेहो गांधी महतमाक हमा लागल रहैन। सुदा हमरा बूझ मे नहि अबैत छल जे किसान लोक बेकार अपना कें बरबाद कए अछि। ने मारि-पीट, ने मारि-मारि आले झगड़ा-झंझट। फेर किया पुलिस अकरी पकड़ि कए कए आइत छैक। सरकार पागल मे कए गेलैया। हम एक दिन महेन बाबू सँ पुछबो कैलियनि आ उत्तर मे ओ बहुत बात कहलनि सुदा हो भाइ हमरा बूझ मे किछु नहि आएल। नेर-बेर

हम इयाद सांचैत छी जे बाबू के अखन अइसे नवयाक खेलैन तखन हमरो नेने अइसथि। ई जे दस दस, पाँच-पाँच आदमी कुर्ता, धोती, टोपी पहिर कऽ गदा मे नाला पहिरने चढ़ल्हा खेली जकाँ नून बनाबऽ आइल रहथि तऽ हमरो ई बाबू लोकनिक एकटा खेले बुझना जाए। अहुना कहिया कनरा तोरान भेटलैया।

अधिक काल तक गुम-सुम रहबाक अवसर हमरा महेन बाबूक ओतऽ कहियो नहि भेटल। हमरा उमिरक बच्चा सँ डुनकर घर भरल रहैन अपना भाए-बहिन मे नमहर महेन बाबू छला, भाए तेसर आ चारिम बहिन उमिर मे हमर एलेक टा रहैन, चारिटा छोट-छोट। ओ कहियो हमरा कखन नहि रहर देलनि। बड़ा बाबू आ अम्माजी सेहो हमरा पर नजरि रखैत रहथि। पन्द्रह पन्द्रह दिन पर हजाम अबै आ बच्चा सबके केश काटि जाइ। शनि दिन कऽ भोल कपड़ाक मोटरी लऽ कऽ धोबी अबैक। भोजन मे दू एक तुकड़ी माछ नित दिन अवश्य भेटि जाए। हम नहि चाहैत रही कि चाय पीबाक लति पकड़ ओहो महेन बाबू हमरा जबरदस्ती पिअबैत छलाह।

आर हमर काजे की रहए? महेन बाबूक घोड़ बहुत सेवा टहल आ साँझ कऽ छोटका खोड़ा बाबू के रथरक पहिया बला छोटका गाड़ी मे घुमा लेनाई। बड़ा मौज छल। भरि पेट खेनाई आ ताजि कऽ सुतनाई। हमर ओ छोटकी भलिकाइन आ एहि अम्माजीक बीच अकास-पताल अन्तर। एतए हमरा केओ कहियो गारि नहि देलक। केओ कुत्ता हुआर नहि कहलक। केओ कान नहि अंइठलक। उनके एतए महेन बाबूक छोटकी बहिन तब तमगर आ कमेरक भुमका सँ हमरा कानक काज लिगार करए। एक बार कहिअ, कहबाक तऽ नइ कनरो। नइ कहबहक तऽ कहबऽ। अच्छा तऽ सुनह। हमरा सँ लाल जइ मासक छोट खुल। अनीता नाँव छले ओकर।

[illegible] छोटकी बहिन [illegible] आ दू ना ई ओकरा सँ नमहर रहै [illegible] गोल चेहरा, बड़का-बड़का आँखि, चाकर कपार, चाकर-चाकर ठोर बाली छोट-छिन मासुमि [illegible] ओ। मालगान लिखाबक हेतु हुनका ओहि-ठाम मास्टर अबैत छलाथिन। पढ़ाबक हेतु तऽ फराके मास्टर रहबे करैक।

बंगाली लोकनि बड़ा मौजी होइत छथि। खाली खेब-पीब, पढ़ब-लीखब आ कपैट पैसा नहि, नाच-गान आ रंग-रंग सेहो चाही हुनका लोकनि कें। ठीके ने छइ हो माई केओ अगर ठेकान सँ जिनगी बिताबे तऽ कि हर्ज? तऽ हो माई, ओ अनीता खूब कढ़िया नचै। गला सेहो आकर बड़ मीठ रहै आ हमरा तऽ खूबे भाने। किछु दिन तक तऽ हम ओकरा सँ दूर भगैत रहलहुँ। मुदा देखल जे बेचारी चोराकऽ हमरा खेल बिस्कुट आ चोकलेट लबैत अछि। एक छोट-छिन कक्षा आ एक ऐना कतो सँ आनि कए ओ हमर [illegible] आ [illegible] दादाक (महेन बाबू) संगे रहैत छी। अहि ठाम एतेकटा ऐना राखल छैक। कहियो-कहियो ओहि मे अपन चेहरा देखि लेब कऽ

किछु, कि अछि हमरा चेहरा मे? हम जे ई पुछलियै तऽ अनीता हमरा दहिना गाल मे एक थप्पड़ मारि कहलक—रहतो की? तोहर केश बहुत बढ़िया छैक। सोन सन केश सभ के नहि होइत छैक। एहि केश मे ककबा जकाँ फिरबाक चाही। कनीकाल बाद फेर बाजल—हम राधा बनब आ तों कृष्ण बनिकऽ हमरा संगे नचबे?

ओकर देखल तऽ की कहत?—हम ओकरा दिस देखि कए कहलियैक।

हमरा कान मे ओ फुसफुसा कऽ कहलक—दुपहर मे कहाँ केओ रहैत छैक? आ नाचऽ घर मे घुरब नहि पहिरब। ने घुंघुर झुंघुरक आवाज हेतै आ ने केओ बुझतै—। एकरा बाद अपन दूनू हाथ हमरा कन्हा पर राखि बजुर

दृष्टिएं अनीता हमरा सँ हँ करा छेलक [illegible] दिन [illegible] मौन दिन बाद अवसर भेटल त हमरा लोकनि खूब लड़लहुँ। आउ कलाक तक हमरा अवैत नहि छलि, तखन अनीताक हठ छलैक से हो भाई हम आकर बात राखि देलियैक।

फूल बाबू फागुन मे छुटि अएला। महेन बाबू कुलनाइ शरीफक केस जेल मे जाकऽ हुनका सँ भेंट कऽ अएल रहथिन। हमरो कुशल-क्षेम पूछि आएल रहथिन, छुट्टिये [illegible]

अपना मालिक के लेबिते हमर मोन मौन गेल [illegible] हमरा आँखि मे देखल लगलाह [illegible] हमर आँखि भरि आएल। [illegible] हमरा [illegible] अथवा पहिनुका चियोक।

फेर ओ अपना जीवन क्रम नहि गेलाह। महेन बाबू अपन मालिक मुंगेर गेल रहथि। ओही दिन साँझ कऽ मालिक अपना डेरा मे चलि अएलाह। हम देखल जे मालिक बहुत परेशान गेल छथि। साँझ-प्रात गाँधीक भजन गबैत छलाह। जेले सँ गीताक एक छोट पोथी लए आएल छलाह। किछु दिन बाद बक्सा मे रहए वला एक चरखा खरीद लएलाह। खेन-बिन सेहो हुनकर अवलि गेल छलैन। मगला सिरचाई किछु मे। सरकारी जमीन कऽ खाइत छलाह। एक दिन देखल जे कटोरी मे गहूम भीजऽ देलखिन। हम तऽ बूझि नहि सकलियैं जे एकर कि हेतैक। दोसर दिन छानि कऽ गहूम के प्रीमल अंगपोछापर पसारि देलखिन। प्रातःकाल गहूमक दाना अंकुरा गेलैक तऽ फूलबाबू एक-एक दाना कऽ खाएलनि। कहियो बसमत आबू, पिआज आ गुड़ पर रहि जाइत छलाह। हमरा तऽ हो भाई अन्देशा भऽ गेल जे ई [illegible] गेलैन अछि।

[illegible] रहैत। गाँव-घर लएबाक तऽ नहि सुदा दरभंगा लाए कांग्रेसक काज करबाक विचार करए लगलाह। महेन बाबू बीच-बीच मे आबथि आ दूनू मे देर-देर तक गप्प होइन। हम छलहु जकाँ हुनका लोकनिक बात सुनी। अपन मालिक आ महेन बाबूक कृपा सँ अक्षर मे मात्रा कनेनाइ आब हम सीख गेल रही। कऽ तऽ कऽ बच्चाक पहिल पोथी हम पढ़ए लागल रही।

फूल बाबूक मोन पढ़ाई सँ उखड़ि गेल रहैन। माए बापक घर आब हुनका नहि छलैन। ओ महेन बाबू सँ एक दिन साफ-साफ कहलखिन—हो भाई, हमरा मे हँ मन नहि देखइ। घरक लोक सब हमरा वकील बनाएए चाहैत छथि। वकालत मे गाल-बाल मे मूल बजाए पड़ैत छैक। अन्य कोनो बोसर-नेसर नौकरी सेहो हमरा सँ नहि हेतै। एतेक जमीन अछि जे हमर माए बाप भूख नहि मरताह। अस्तु अपना देशक सेवा करए दऽ। तों बैरिस्टर बनबऽ, विलायत जेबह। तोहर रस्ता दोसर छह आ हमर दोसर।

पहिला दू मास मे हमरा माए के नौकि पाँच-पाँच रुपैयाक मनिआडर पठौने छलखिन। जेल सँ अएलाह तऽ पाँच रुपैया फेर पठा देलखिन।

[illegible] हमरा सँ ओ कहए लगलाह—[illegible], महेन बाबू ठाम नौकरी करबे। हम तऽ पढ़ाई आब छोड़ि देल। दरभंगा समस्तीपुर, मधुबनी, मुजफ्फरपुर, पटना जाए कांग्रेस पठाबेत ओतए रहि कऽ काज करब। आब हमरा नोकर नइ चाही। गाँधीक हुकुम छनि जे अपन नदी सेहो अपने साफ करए। अपन कपड़ा अपने साफ करए। अपन भोजन अपने बनाबे।

हम रहिने सँ चुप्पे रही। कनीकालक बाद हम कहलियैन—चारि-पाँच मास भए गेल। माए मोन पड़ैत अछि। घर जाए चाहैत छी। माए के विचार हेतैक तऽ फेरो पटना आयब। अइ पर ओ बजलाह—तऽ चल दरभंगा तक संगे। ओही दिन राति अहाज सँ हमरा लोकनि देशक (गाँव) दिस विदा भेलहुँ।

३

हमर छोटकी बहिन रेवती चौदहम बिता कऽ पन्द्रहम मे पैर राखि चुकल छथि। चेहरा-मोहरा खूबि बाढ़ल रहै। जवान भऽ रहल छथि। दुरागमनक येह ने बेस छै। हमरा समाज मे बिआह पर आते ध्यान नहि देल जाइत छैक अतेक दुरागमन पर।

हमर भोत रहए जे रेवतीक दुरागमन भऽ जाइक। मुदा हमर माए नहि चाहैत रहैक। सोकर विचार छलैक जे रेवती अधम बेसा अछि। दू-तीन बरख आरो नइहर मे खेल-खा लिए, फेर तऽ जिनगी भरि गिरहस्तीक पहाड़ माथ पर ढोबाक छैक।

माए जे एना सोचे सकर एक दोसरो कारण रहै। बात ई रहै जे हमरा लोकनि लोहि छोट परिवार मे सब मिलाकऽ तीनिए गोटे रही; बाऽ बऽ कऽ हम, रेवती आ माए। हम बाऽ माए पर देखा मे रहि जाएल रही। रेवतीए रही जकरा छाती लगाकए माए सुतैत रही। रेवतीक दुरागमनक बाद माए एसगरि भऽ जाइत। हमर रहनाई आ ने रहनाई एके रंग कारण माएक देख-रेख, हिफाजत, खेर-खबरि आ परवरिश तऽ हम कऽ सकैत छलियै मुदा रेवती लकाँ ओकर सहेलीक अभाव हटेबाह हमरा हुआक बाहर छले।

हमरा एतबे चिन्ता रहै जे जमीन्दारक गाँव छैक। ई लोकनि खुल्ला हीरत छथि। बसूल-तहसीलक काज गुमस्ता बराहिलक माथ, घर गिरहस्तीक

देख भाल छोट भाइ पर रहैक। काज बहिया खेबाक माथ, खेत बचलाह बेटा माली, भाई-भातीज, आ बाप-बरबेटा से बैसल बैसल ताश पीटता, इन्दर खेलता, शहर जाऽ कऽ सिनेमा देखि ओताह, बेकार भोग शैतानक घर। खेत पिन आ आराम्क कसिए नहि, काज कोनो करताह नहि ककरो बेटी बयान भेले नइ कि निशाना लगाबए लगैत छथि। ई नई कि बहिन-बेटी सभक एके रंग होइत छैक। अपन इज्जत आबरू जे सम्हारे तऽ दोसरो के नीक होएत छैक। मुदा हो माई! जिनका लोकनि कें धन होइत छन्हि से निरट आन्हर होइत छथि। अपन आन किछु नहि सुझैत छन्हि।

आ हम तऽ गरीब ब्रह्मण्ड। हमरा लोकनिक धन आर होइछै कि अछि, एक ए-खटा लेनाई दुनू हाथ, माए बहिन-बेटीक इज्जत आबरू, येह ने हमरा लोकनिक धन अछि। सोही कहऽ, हमरा लोकनि एकरो रक्षा नहि करी तऽ ई जिनगी कोन काजक।

हमर गाँव जमीन्दारक गाँव छल। बड़का घरक कि जवान आ कि बूढ़ सभक आँखि पाप मे डूबल रहैत छैक। दुरागमनक बाद केओ बबकनिया ककरो घर अबैत तऽ नहि खुल्ला लोकनिक आँखि ओकरा चोथक चाकचौबन्द रहैत छै। आमक बाग आध-ओध दृष्टि सँ देखि ने लेताह ताबत धरि बदमाश लोकनि कें रात्रि मे निन्द नहि हेतैन। कतेक बेरतक एहन भऽ जाइत छैक जे जकरा देखए लेल बाप दरान ककरे लेल बेटा परेशान। साइदिन पालिक सभक राज रहैन। हुनका लोकनिक खिलाफ ओ अपन छोटको कोंगुर मे उठा सकितह। ककरो इज्जत आबरू के बेदाग रहए देब हुनका लोकनि के एहा नहि छलैन।

हम नई चाहैत छलहुँ जे हमरा बहिनक शरीर पर कोहि खुल्ला लोकनिक हाथ पड़ै। हम नइ चाहैत रही जे हमर माए अपन बेटीक आमदनीक साधन

बनाबे। गरीबी नरक छूट हो गाई! नरक चाउरक चारि दाना छीटका महेसिया सेना चिड़िया के फलबंद छैक ओहिना ई धनवान गरबू लोकनि स्त्रीगनके फंसा लैत छथि। हुनका लोकनि के पास धनो होइत छैन्ह आ बुद्धियो। हुनका लोकनिक सोसा अपरमपार थीक। नमहर खानदानक अवारा सँ अवारा लोक पण्डित आ पुरोहित सँ मलमनगाहतक पदवी पाबि जाइत छथि।

से हो भाई! हम चाहैत रही जे रेवनी आब अपना गरबू के संग रहे। बाबू लोकनिक गहि बस्ती मे अपना बहिन के रहनाइ हमरा पसीन नहि छल। छोटका मालिक आ मंझला-मालिक आ छोटर पटीक बाबू बबूआन ककरो पर हमरा भरोसा नहि छल। आ आब तऽ हम एहना देखि आएल रही। महेन बाबू कि राजा नहि छलाह? हुनका ओहि ठाम कि सुन्दर स्त्री पुरुषक कमी छलैन? ओहन जगह पर रेवनी के चारि-छह मास रहि जायब हमरा नहि अछरइत। महेन बाबूक घरक लोक सब नीक नजरिक छलाह। मुदा एहिठाम महेन बाबूक परिवार हमरा कोन काज अबैत? एत तऽ छोटका आ मझिला मालिक रहथि। मलिकानक नैह पड़ी रहैन। होरा बाबू, बुच्चन बाबू, मालिकजी, बचोलबाबू, लालमोहन—मालिकक ढाका भरि ग हरजाइ रहथि। एक मऽ एक शैतान। एक सँ एक मगनू। हतऽ मऽ नहि सकैत छले जे हमरा बहिन पर हुनका लोकनिक नजरि नहि रहल होनि।

हमर माए ई बात नइ बुझै, ओकरा मालिक सब पर बड़ भरोस छलै। समझैला सँ ओ एतबे कहइ, पानि मे रहि कऽ गोहि सऽ झगड़ा? जिनका लोकनिक ऐठ खाकऽ तो एतेकटा भेलहु हुनके लोकनिक विषय मे एहन-एहन बात सोचैत छे। अधरम इनो रे बलधनमा, अधरम भगवान बिगड़ि जैथुन। शहर जाकऽ इयाद किया लोक एलेऽइऽ। सोहर बाबा-आबा तऽ सेहो दिनके

लोकनिक ऐठ खाकऽ फेरन-फारन पहिर कऽ जिनगी बिता देलखुन, एहन उड़न्त उड़ बन गेला।

हमर माए ओहिना सोचैक। छोट मालिक दोसर स्त्रीगनक सेहो मालिक लोकनिक विषय मे एहने किछु विचार रहैक। खसल अवस्थो मे तऽ ओ लोकनि मालिके छलाह। मालिक लोकनि राजा होइत छथि आ राजा भेलाह भगवानक अवतार। हुनका लोकनिक खिलाफ के किछु सोचि सकैत छल?

मुदा गतरि हमरा बुझैबाक फल ई भेल जे माए किछु सोचबाक देइ मजबूर भेल। सो राजी भऽगेल जे रेवनीक हुरगमन कऽ देल जाइ।

बैशाखक मास रहैक। ओह साल आम नहि फरल रहैक। आब हमरा पूरा अनोरी भेटऽ लागल। कच्चा लोस मे पूरे चारि सेर धान हमरा अनोरी मे साहि दिन माए के भेटलैक आइदिन ओ मानन्दक धार मे बहि गेल। एहि बुड़िया मिलमंगी सँ ओही खुशी मे ओ आधा सेर धान कऽ देलकैक। ओह राति जखन हम खाए बैसलहुँ तऽ बड़ा सिनेह सँ माए हमरा रोटा ठोकऽ लागल। ओकरा नजरि मे हो भाई आब हम पूर्ण आदमी भऽ गेल छलहुँ। छलहुँ मे।

हमरा ओहिठाम छोटका जाइत मे मऽहुआक बड़ आदर छैक। महियो-कहियो ओनि मे धानक बदला लोक मऽहुए के पसीन करैत छैक। अस्तु गरीब के लेल थोड़ बहुत उपरारि जमीन होइत छैक ओहमे ओ मऽहुए रोपनाइ पसीन करैत अछि। बैशाख मे पानि पटा-पटाकऽ मऽहुआक बीजा तैयार कऽल जाइत छैक। ओकरा निरबिन पाइन चाही, बीत-बेर बीतक भऽ गेला पर मऽहुआक बीजा उपारि लेल जाइत छैक। फेर ओकरा जोतल आ भुरभुरी माटिवला भीजल खेत मे रोपल जाइत छैक। मऽहुआक श्याम-सलोना डाँट-पात सँ लहलहाइत खेत तो कहीं देखने छइ। नहि देखने छइ तऽ देखि अजिऽ

भैया मोन हरिभर मइ जइतइ ! धानक [illegible] करके शोभा छइ छ सौंवलिया बिहारी मधुशालाल के अपन फराक।

घरक पाछू मे हमरा सोरेक जमीन रहइ। अइधेर हम अपने मालिकक पोखरि सँ पैल भरि-भरि कइ सपलौं। हमर बाबू सेहो अँगना पानि भरि-भरि कइ मधुआ-पटबैत रहथि। सीक पटइ सँ पानि भरबाक अवसर मइ सँ पहिने हमरा कहियो नइ भेटल छल, तइयो नाँइ ओइ आ उमंग क ओइ बेर मधुआक खेती हम कएलौं से हेलिकइ सोक सब देग रहि गेल। एमहर कनेक थकावट बुझाएल कइ बीड़ी टानि लेलहुँ। बीड़ी पीबाक इ हिस्सक पटना मे लगाल रहे। अकेला पर बीड़ीक एकाध दम या नीक लगे छइ हो भाइ! आ फेर हमर मइ इ हाल अछि जे दू दम खिचलौं कि फेर भिक्षा देल आ ओइ अधजर बीड़ी कें कानपर खोसि लेलहुँ। तीन बेर मे हम एक बीड़ी खतम करैत छलहुँ।

ओ हमर बचपनइल पहिल फसल छल। केद कइ खेत मे ६ पसेरी मधुआ भेल छल। अपन मेहनतिक फल केहन मीठ होइत छइ। अपन उपजाइल मधुआक रोटी सँ पेट तोहर भलेही भरि जाय, हियाब नहि भरतह तोहर, हँ!

मधुआक बाद धान रोपबाक दिन अएलै। मालिकक खेत मे दिन भरि श्रम धान रोपैत रही आ घरक सब काज माए आ रेवती बाबू सँ थाकल माँदल, मेहनति सँ चूर-चूर जखम सोक कइ हम घर आबी तइ घर मे भोजन तैयार पाबी, दुपहरक भोजन मालिकक बिस सँ खेते मे पहुँचि जाइत छल—दालि, भात आ अचार। धनरोपनीक दिन मे इ लोकनि खेतक पनकि भोजनो करा देत छलथीन। अइमे बचा-मपाक कोनो काज नहि, हुनका लोकनिक अपन खास काज करै छैन। अपन-अपन खेत पहिने तैयार करा लेताह

फिफिर पसुज रहैत छैन। दूर दूर सँ जन पनाओल जाइत छैक। सबके बछड़ा-दादा, कका कइल जाइत छैक। सुगा, राधा आ मुन्नाक बोलो देल जाइत छैक। पूरा बोनि आ एक बेरक भरि पेट खेनाई कइ कइ सब अपन-अपन खेती करैत छथि। ओइ काल पहिल बेर हम पूरा बोनि पर धनरोपनीक काज [illegible] छाटकी मालिकाइनक किछु दिनक लेल नैहर गेल रहथि। नौकरी छोड़ि कइ मालिक घर बैसल रहथि। खेतीक काज मलिकाइनक भाई-देखैत रहथीन। मालिक बाबू दिन भरि किताब आ हरमुनियम मे डूबल रहथि।

माए हुनका ओइठाम घरक काज पहिने जकाँ अखनो करैत रहै—बासन धोनाई, पानि भरनाई, झाड़ू-बारहनि देनाई, नीपब-पोतब, चुल्हा चरा कइ भातक चढ़ा देन इ इयाद सब काज चलैक। काज बेसी नइ, तइयो लबटोनी नइ चलै। अपटोनी मानि बुझलइक हो भाइ! नइ बुझने हेबइक। हो भाई एक ओइ छइ काज लेनाई—चटसँ कइलहुँ आ पट सँ काज भइ गेलैक। दोसर ओइ छइ चिरोर-पिरोर कएनाई। चिचिर चिचिर भाने ओइ छइ अपनो फरूट मे पइल रहनाई आ दोसरो के ओझरौने रहनाइ। ने अपना समयक कदर आनै दोसरक। देहात मे जे नम्बर लोक कइलेल छथि, हुनका ओइठाम ने कायक मूइल आनइ कमासुत भइनक। हमर बाप-दादा लोकनि दू-दू पहर बैस कए मालिकक ओंगुर चटकर्थिन। मालिकक छोट छिन लेनाक पैर पोछइ मे हुनका लोकनि के कतेक घंटा लागि जाइत छलैन। बूढ़ा मालिक हेतु तम कुर्सी चुनाबइ मे आधा पहर लागि जाइत छलैन। सुनै छी जे हमर दादा बहुत बढ़िया खेमाती करैत छलाह। अपना मालिकक बाती के ओ इहन नेही कइ सुनिअबितथि कि केआ बाती के फूकिरइ तइ सर सँ चढ़ि जाए आ फेर जहिना के तहिना बैस जाए! मालिक ओ एन करथिन कि पागल सँ पागल आदमीक ओंगि पर नीन सवार भइ जैतनि छइ

बनावट मे रस कोल तक हुनकर बसा रहैन। सुवा की भाई। हुनकर तरहत्थीक सब रस घाटिकेइ मालिकक तथा वह गुलाब बनल रहल होनि, अपन बाल-बच्चा हुनकर खाइते कहियो भरि देह कपड़ा अथवा भरिपेट भोजन कएने हेतैन। तीन पुरखाक हाल तक हमहू कहि सकैत छिअइ। मालिकक ऐठक सुन गबैत आ हुनका सालकिक छिकट सं-चिपट गारि के पंक्तिभाव सं सुनैत हम अपना दादी कें देखल। राति-दिन सेवा करिते रहलइ। पाथ-माथ पाथ खुद्दीक खेल हमर माए कीना दिरिआइत घुमे से घिनरक मात छइ? आ अपना बचपनक थोड़ बहुत हाल हम कहिए देने छिअइ। आब तोही कहह जे हमर तीन पुरखा कीन काज अएलो। मालिकक खेल खेला आ मालिकक खेल मरलाइ। शहर मे देखलिये केहन पुर्जा सं लोक काज करैत अछि, केना एक दोसरक मेहनति आ लगनक हुनका लोकनिकें ध्यान रहैत छनैन। आह, तीन पुरुख पहिने जे आदमी कलकत्ता टाटानगर मेल से ओहे बसि गेल। ओकरा लोकनिक बाल-बच्चा सब पढ़ि लीखि मेलैक अछि हो भाई, नीक-निकुस पहिरैत खाएत अछि। बाबू, कारीगर, मिस्त्री, फोरमैन आदि बन गेलै। आ सात पुरुख हमरा ओइ गाँव में रहैत भऽ गेल, फटीचरी मे कोनो फर्क नहि पड़ल। दादी के मुँह सं सुनने छी, हमर पुरखा पहिने धनिचोम मे चहिआ-गिरी करैत रहथि। हमरा परबाबाक परबाबा कें ओहिठामक एक जमींदार दरेज मे जमाइक संग भऽ देने रहथिन। तहिया सं लगभग ई सातम पुरुख बीत रहल अछि। दुनिया जहान बदलि गेलैक अछि। मालिक लोकनिक दशा बदलि गेलैन अछि। हमरा लोकनिक गुलामी पर काफी असर पड़लैक अछि मुदा अखनो तक मालिक लोकनिक रहन-सहनक ढंग रहलैन कि राति दिन हमरा लोकनि हुनका पाछा नागरि घिसैत फिरैत छलकै। काज ओतेक नहि अछि कि

खुशामद। हमरा लोकनिक मुँह सं दिन मे पचास-पचास बेर मालिक-मालिक, सरकार सरकार, हुजूर-हुजूर सुनइ मे आबि गइ बाबू लोकनि कें की रस अबैत छलनिह। आ माएक तऽ किछु पूछइ नइ, जो तऽ बात-बात मे मलिकाइन-मलिकाइन, सरकार-सरकार रट लगौने रहए। कलकतिया, मालदह, किसुनभोग आ बम्बई आमक एक कतरा खेल ओ कतेक घंटा तक मलिकाइनक पैर असेस रहैत रही।

छोटका मालिक रंगल चिक्कन आदमी रहथि। चालीस पार कए चुकल छलाह। मोंछ-दाढ़ी साफ। लाल-गुलाबी आ गोल मटोल चेहरा एहन सुन्दर लगैन से कि कहिअ। माथक केश कारी भुजंग रहैन, बँचठिया। टेरि फराक कऽ नहि छलैन। शहरक हवा जे खएने छलाह। बी० ए० तक पढ़ि कऽ छोड़ि देने छलाह। पहिने किछु दिन सुपौल मे मास्टरी करैत छलाह। बाद मे राँची, हजारीबागक दिस कोनो राजाक ओहिठाम मैनेजरी हाथ लगलैन। जायत तक बोतल रहथि, पीबो आगुर चीबे मे। एगहर दू-तीन मास सं घर बैसल रहथि। मलिकाइन रहथिन नइ। मोन उदास रहैन।

एक दिन माएक संग रेबनी सेही काजपर गेली। चीकस पीसबाक रही। माए कहलकै—दू हाथ लगा देबे तऽ जल्दी पीस लेब। मालिक मधुबनी उबाबिन, दिनकऽ आम, दूध आ फुलका खाकऽ। रेबनी सेही संग गेली। हुनु माए-बेटी चीकस पीस चुकल तऽ मालिक सोर पारलथिन-चलचनमाक माए, अरे तोहर बेटी तऽ बड़ि कऽ ताड़ भेल जाइत छो।

ई कहिकऽ ओ एड़ीसं शिखा तक रेबनी कें देखइ लगलथिन आ नचाकऽ बोलि घुमा देलथिन। सामने दीवर घरक ओसारा पर पलंग पड़ल रही। गद्दा, चादरि आ तकिया, जकरा दूधसन दप-दप उजर खोलपर काल-कलिदार

डोराक कसीदा छलैक—कोल मे लोल फिरौने टूटा सुनगा। ओही पर बेहुनी रोपने मालिक बैसल रहथि।

आँखि फाड़ि-फाड़ि कइ ओ रेवनी कें देखलखिन। चिकस पीस हेलाएर माए संग जखन ओ रेवनीक बात उठौलखिन कइ ओ [illegible]—बरनी कें बाबू जखन, की आइ पी कइ को ताड़ इलैक।

एते कहि कइ ओ फेर कोनी काज मे लागि गेलैक। नमहर माटि बलाक लोका मे हमरा घरक माए-बहिन बहुत कम अबैत छैक। ओहू मे सुन्दरी यदि मालिक आ नोकरानीक रहलैक तइ लिहाज आर बेसी अहि आइत छैक। सुदा भैया, बड़का लोकक चुलबुली बनियत के पछबे मे कतोय कतइ ओ लोकनि बेकार हमरा लोकनिक घरक स्त्रीगणक संग बिना मालक बात करबाक बहना तकैत रहैत छथि।

माएक ओहि उत्तर कें छोटका मालिकक मोन नहि भरलैन। कनी-काल माए कहलखिन—ती आइ आगि जरा बलचनमा माए, रेवनी एमहर आबि कइ कनी पंखा हौंकि देत। ई बाति कइ मालिक एहन मुसकार छोड़लैन जे मुकइ लेना आगि मे माँटा। कहिए छुकल छिल जे हमरा माए के मालिकक नेत पर बड़ा भरोस रहै। ओ हुनका लोकनि कें देवताक अवतार बुझैन। अस्तु ओ आँखि कें रेवनी के इशारा कएल कै जे या कइ कनी पंखा हौंकि दहुन।

पंखा नइ रहै, बिरनि रहै जे रेवनीक हाथ मे कइ देल गेलैक आ ओ आँखि नीचा कएने बिरनि चलाबइ लगलैक। बिरनि मे नूठक लग पातर बाँसक फोफी रहैत छैक। गोल आ चिकन फोफी के भीतर बिरनिक काठी पइसल रहै छैक। मुट्ठी मे लइ कइ कनिके डालगला कें बिरनि अपने कें चलइ लगैत छैक। कि ई फिर, फिर फिर, फिरिर-फिरिर बड़ मीठ आवाज

होइ छइ ओ भाई! बगल मे बैस कइ कैओ पंखा चलएतइ आ तों एहन-एहन हवा खाइत रहह, तइ लोहर सपन, हो भाई आँखि नइ लागि जाओ तइ जे कहइ।

रेवनी जखन पंखा करबे अलो तइ गइ कें मालिक गेलथा डर मे हाथ गेलथि आ अठन्नी निकालइलगि पलंगक। पोआक माथ चपटल रहै, ओही पर अठन्नी धइ देलखिन। रेवनीक आँखि मे लोभक दर्शि नइ रहैक, ओ अठन्नीक दिस देखबो नइ केलकै। पछिने जकाँ झुकिग रहि मालिक कें पंखा हौंकैत रहली। मोन मे सोचलक जे दोकान कें कोनो चीज वस्तु मँगाइत चाहैत छथि। अही कें चुपचाप रेवनी बिरनि चलबैत रहली।

एमहर मालिक के मोन मे तइ ओ भाइ घेलाय छिपुर जकाँ झकझोरैत रहैन। ओ सोचैत छथ हेताह, छौंडी छइकि खाँड़ि। नइ हिले डर मे डोले छइ। बेहन पाथर छइ। हुनका लोकनिक एहन सोचनाई बेकार नइ रहैन। कारण जखन ओ बुझान रहथि तइ अही गाँम मे एक दुअड़ी मे हमरा छौंडी भेटैत रही। रेवनी अहिग भइ कइ मालिक कें पंखा हौंकैत रहलैन। फेर मालिक अइनीक दिस इशारा करैत कहलखिन छइयेत किमाक नहि छे। रेवनी अठन्नी दिस देखि फेर पंखा हौंकइ लगलैन। कनी काल उपरि कइ मालिक सें ओ पुछलकैन—किछु मँगाइत के अछि सरकार, दोकान जाइ।

ई कहैत काल रेवनीक दृष्टि नीचा दिस रहैक। आँखि मे कोनो विकार नइ रही। एकतइ अइ अवस्था मे बेटी तब अहिना संकोची होइत छइ भाई, आ हमरा बहिनक तइ हाले मे पूछइ। मेने कें ओ शील-संकोचवाली छथि। आँखि मिला कइ कथो सें बातचीत करैत कहिओ ओकरा देखबे नहि केलियैक। ई सोचि कइ कि बनैया, मालिक हुक्कइ लगलाइ। आज हिलाकइ

भौंह तानिकऽ आँखि के' नचौलनि। ओ हवा करैत आ रहल छलै, हुनक कुविचार सँ अनाभ्यस्त।

अपन वहिन उमिर मे मालिक खेलल छलाह। एहन अवसर पर चुपचाप ठाढ़ वा नइ-नइ कनैत बीसी के ओ कहा पकड़ने रहथि। ई हुनका लेल एकदम मामूली बात छलैन। छीकऽ खाँसऽ लगतै तो भाइ बिल्कुल मामूली बात। मनला घर मे माए उमहर हाँसू सँ सनमनि कोरैत रहै। कनैत कहैत कहैत आइमीक डेगना कनैत हाइल छैक। चारि दिन पर हाइल छैक, बीच मे कुनटा लागल आ अइ लाभी जगह कें अपना कनैत छैक। पाखरि कहाँ चौकोर पर आँगन सँ देखने हेबइक। सोझा-सोझी घरक बीच बतैक दूरी रहैत छैक। कोइ ओसारा पर केओ बात करतै तऽ एमहर बलाकें किछु सुनऽ मे नइ अएतै। अइ ओसारा पर छौमासक बच्चा कंठ फाड़ि-फाड़ि कऽ मरि जाएत तऽ ओइ ओसारा पर बैसल माए के किछु पता नहि लगतैक। काज-परोजन मे परोसक हजारो आगन पाँती मे बैस कऽ भोजन करैत छथि। पचास-पचास मोन धान गुलाए सेल पसारि देल जाइत छैक। एतेकटा-टा अँगना होइत छैन्ह जमीनदार लोकनि कें।

तऽ ही भाई! मालिक के इयाद अवसर सुतलनि आ नट भऽ रेबनीक गट्टा पकड़ि लेलखिन। हाथ मटकि कऽ फुरती सँ रेबनी तू डेग पाछा भऽ गेल, बुझऽ जे लेबी ओकरा माथ पर एक सूप माटि राखि देने होइन। पंजो हाथ सँ छूटि गेल रहैक। चीलक बदला इयुक हाथ सुनि मालिक एकरा नाटक बुझलखिन आ पलंग सँ उठि कऽ आगाँ बढ़ल छ।

माए गे माए—रेबनी बकारि तोरि कऽ भागल तऽ मालिक जनदे ओर सँ तोर पारलखिन—कहाँ गेले गे बलचनमाक माए, तोरा बेटी कें तऽ भूत लागि गेलैक अछि। एक हाथ मे हाँसू आ दोसर मे छीलल तमाकुनिक फाँक

लऽ कऽ माए बहिनपरिया घर सँ बाहर भेलै तऽ रेबनी बेतहाश दौड़ि ओकरा सँ चिपटि गेलै—गे माए गे माए! ओ खेतोम सेहो आँगन मे किछु दूर बैठि आएल रहै आ मुखाएल गला सँ खिलखिलाइत रहै।

हमर माए एइन हएत बुझ भऽ गेल कि आँखि फाड़ि कऽ रेबनी दिस मात्र देखि रहल छलि। एमहर मालिक अपन चालि बदललनि। अपन बहिना हाथ हिला-हिलाकऽ जोर सँ चीकरइ लगला—होए् होए्! बाप रे बाप! धिनौ काटि लेलक।

रेबनी के छोड़ि कऽ माए दौड़ि अएले। अही बीच मालिक अपना बाँहि पर आने सँ चिकुआ काटि लेलनि, कि चेन्ह निकलि आये। एकरा बाद ओ माए सँ कहलखिन दू चुन्द मटिया तेल लऽ आउ।

अपना लोइठाम बिरनी कटला पर मटिया तेल लगबैत छैक। घर मे मटिया तेल रहबे नइ करै। ई बात मालिक के बूझल रहैन। लऽ माए के ओ कहलखिन बीस, कओ सँ चुन्द भरि मटिया तेल लऽ आ। ओमहर बहिनपरिया ओसारा पर बैस कऽ रेबनी सिसकि रहल छल। आँगन फेर सुन भऽ गेलै कारण माए मटिया तेल लाबए चलि गेल रहैक। लग मे आबि कऽ मालिक रेबनी सँ कहलखिन—पगली कहाँ के! भेलौ कि तोरा? हम तऽ अहिना तोरा छूबि देने छलिओ आ तों करम पिसाची खेलऽ लगलें। तोरे एतेकटा उमरि मे तोरा माएक दुरागमन भेल रहैक। आ अहिना पचीसो बेर हम मोकर हाथ पकरने हेबै.....

मूक-सोए मे हुनकि कऽ रेबनी जबाब देलकैन—आहाँ झूठ बचैत छी! एतेक जड़िकऽ ओ उठि ठाढ़ि भेल। दुनू हाथ पसरि कऽ आगाँ सँ मालिक ओकरा घेरऽ चाहलखिन। रेबनीक भौं अइसेर सनि गेलैक, चेहरा पर घृणा भरि गेलैक। हिम्मत बान्हि कऽ ओ कहलकैन—ई की भऽ गेल आह

आहाँ के मालिक ?' ...

सरकार'''सरकार''' । मालिक एहन हँसी हँसलनि कि रेवतीक शीश घूम भऽ गेलै । लाभाक भा बलपारीक ई खिलखिलाहट ऐंद्रजालिक और अबाध धाँड़ीक लेल बिल्कुल नव वस्तु रहैक भैया, एकदम नव वस्तु ।

डर सँ थोकर करेज काँपि लगलै, एमा काँपि लगलै, जेना केराक चिकन पात बतासक हल्का झिटका पाबि कऽ काँपि उठैत छै। [illegible] लेल बेचारिक हाथ सुन्न भऽ गेलैक । अचेत नहीं भऽ गेल सुदा रहल ठाढ़े ।

अनचोक रेवतीक भीतर बिजली जकाँ क्रमक लहरि दौड़ि गेलैक। थोकर अंग अंग थुरुक जे कन कन [illegible], प्रत्येक गेलनि [illegible] अलैक। छाती धड़कऽ लगलैक आ ठोढ़ फड़कऽ लगलैक।

मालिक अपना धुन मे मस्त रहथि। ओ [illegible] तय कऽ ने ने छल जे अइ अइ धाँडी कें अचुन नइ छोड़ब। बहुत दिन सँ हुनकर आँखि इमरा बाँझ पर लागल छलैन। ओ अवसर सकेत छलाह। आ देखक इच्छा, आइ अइ शैतान कें अवसर भेटल छलैक। एक साधुक मुँह सँ इम बहुत बढ़िया पद सुनने छलहुँ भैया। सुदा आब मोन नइ लगै आ पदक माने इयाद छलैक जे कामिनी आ कंचनक परीक्षा कऽकऽ मोन अखन खिसियाइत छैक तखन ओकरा ऊपर एक सँ बोतल दूध निशा चढ़ि जाइत छैक, से भैया ओहि दिन इमरा छुटका मालिक घर पें बोतलक निशा चढ़ि गेल रहैन। अपन होश-हवास के गबाँ देने रहथि।

अन्त मे जबरदस्ती ओ नीचा मे रेवती के पटकि देलखिन आ ओकरा देहपर काबू करक कोशिश करए लगलाह। पन्द्रह वर्षक ओ अबोध आ असहाय कन्या अपन सम्पूर्ण शक्ति बटोरि कऽ ओहि पस्त दशा मे सेहो मोकाबिला करऽ लागल कुकुर आ बिलाइक लड़ाई जाँ कहियो देखलहुँ

अछि। बेह हालत रहैक। इमर बहिन हारल नइ। ओ मालिकक गद्दा पर एते जोर सँ [illegible] गेल देखलैक कि समूर अचेत भऽ गेलाह आ रेवती बिजलीक फुर्ती सँ उठि कऽ भागि आएल।

एकराबाद जे घबड़ऽ उठलैक जो हमरा जीवनक रस्ते बदलि देलक।

बात ई भेलैक जे छोटका मालिक एकदम भागि बबूला भऽ गेला। मटिया तेल लऽ कऽ मार अखन हुनका लग गेलैन्ह लऽ ओइ बेचारिक पीठ पर ओ कमिकऽ चारि लात मारलखिन्ह। माए कानल नहि अइंचकऽ रहि गेल। रेवती कें अखन ओ ओइ ठाम नइ देखलकै तऽ कोनो भारि अन्देसा सँ थोकर माथ चकराए लगलैक। छोटका मालिकक एहि राक्षसी स्वभाव के ओ नहि जनैत छी, से बात नें रहै। ओ सब जनैत रहै। बेचारीक चेहरा उजर भऽ गेलैक। आ ओंठिक नोर सुखा गेलैक। आँगन के सून पाबि कऽ मालिक पाछा ओकरा पाबि भरक राखी सँ हाथ पीठ पलंग सँ बान्हि देलकै। माए ओ फुटि-फुटि कानऽ लागलि तऽ मालिक मुँह कऽ कहलखिन—माए साखी, अपना बेटी कें एतऽ लऽ अइये कि नइ ? बाप।

ओ बेचारी की जवाब दितैक। अपन मालिक डर सँ लोक कि नइ पाबि जाइत अछि। सुदा इमर माए बहुत बिलेर रहए। इमरा बाइ जकाँ बात-बात मे ओ दाँत निपोड़ि नहि जाथे। मोनक कमजोर नहिंयो भेला पर अपन इज्जत आ बानीक ओ बहुत पक्का छल।

ओइ दिन ओहनी दशा मे कोनो तरहें मालिक इमरा माए सँ कोनो तरहक पतन नइ लऽ सकला ओकरऊपर बहुत पिटाई पड़ल रहैक। कुहरि कुहरि कऽ समय कटलक। भेलक पेल नोर बहैलक, तइयो ओ नीचरि मालिक अइ शर्त पर मालिकक जेल सँ नइ छुटऽ चाहलक जे ओ हुनका आइ-काल रेवती कें लऽ कऽ

आयत। ओ पाछां मोर भरल आँखि सँ कानि-कानि कऽ ओ कहलक—बड़ुआ बालचन! मरि गेनाइ आज धुन नीक सुदा इज्जतिक सौदा केनाइ नीक नहि।

अपन बापक मुँह सँ एहन बात सुनि कऽ हमर छाती जुड़ा गेल। भागदेसे के' एहन बाप भेटैत छैक भैया। हमहूँ सै कानि लेतहुँ जाहि उजड़ि जाए पड़ए, जाहे अइल-बइल मऽ जाए, चाहे फाँसी चढ़ी, मुदा कहियो ओह जालिम के आगाँ माथ नइ झुकाएब।

हम ओहि दिन घर पर नइ रही, बाहर गेल रही। दूर नइ, लगे दू अढ़ाइ कोस। बात इ रहै जे महदूराक खाँन बहादुर मइलला खाँ इलाकेक बड़ा शौकीन रहथि। नवाबी खानदानी रहथि। बहुत बड़का जमींदारी रहैन। इलाका भरि मे इए टूटा खानदान रहैक जे कइरक सौ बरख सँ राज करैत चलि अबैत रहैक। एक खनदान इयाह हमरा मालिकक रहैन, आ दोसर खान बहादुरक। हमरा मालिकक बहुत जमींदारी छिका गेल रहैन। बसे-पाँच हजार गाछाना आमदनीक मौजे बाँचि गेल रहैन। ई छोटछिन जमींदारिओ बेंचि कऽ एकदम छोट भऽ गेल रहैक। सोलह आनाक सरकार छोट-छोट पट्टीमे बँटैत, एकन्नी, दुअन्नी, पैसा, पाँच-कौड़ी दू-कौड़ी आ आधा कौड़ी तक भऽ गेल रहैक। हमरा मालिकक एहन एक पट्टीक मालिकक नाँव पचकौड़ी बाबू रहैन। एक दोसरे पट्टीक कोनो बाबूक नाम तिनकौड़ी बाबू रहैन मुदा नवाबी खानदान। जमींदारी अखन तक ओहिना रहैक। पुरनका रोब दाब आन महदूरावलाक नइ रहि गेल छलैन। तइयो पचास साठि हजार रुपया सलीस बला जमींदारीक जेहन रोब होबक चाही से तऽ रहबे करैक।

खान बहादुर कें कुश्ती लड़बाक बड़ा शौक रहैन। बूढ़ा पहलवान तऽ ओ अपने बोलने छलाह। इनकर कहब छलैन जे हाथीक बदला पहलवान

पोसबाक चाही। तपारीक काज तऽ बाबी टम-टम सँ चला लेल जा सकैत अछि मुदा अखारा मे जखन दू पैतराबाज दू पट्ठा अपना मे लपटैत अछि तखन ओ आनन्द देखऽ बला कें भेटैत छैक से हाथी पोसऽ बलाकें की लाकऽ भेटतैक।

तऽ हम ओहदिन महदूरा बंगला देखऽ गेल रही। फिरलौंतऽ साँझ भऽ गेल रहैक। गाँवक बाहरे चुन्नी सँ भेंट भेल। ओ हमर नङोटिया संगी रहए। बेह पहिने हमरा टोकलक—के! बालचन!!

पाइनक नाला रहैक। ओह मे लाठी चोपिकऽ ओकरहि बले हम बाहर टपि अएलौं आ जवाब देलियैक—हँ चुन्नी, सबेर भऽ गेल। महदूरा सँ आबि रहल छी।

खूब कुश्ती देखने हेबऽ, के जोड़ा छलै? हम आगाँ बढ़िकऽ कहलियैक मोता, तोरा सेबे नहि कएलह। तोरा तऽ ने अपना महीस सऽ छुट्टी भेटैत छह आने महरानी सँ। महीस फोलैत छह तऽ महरानी बान्हल रहैत छथुन आ महरानी के चसैत छह तऽ महीस बान्हल रहैत छह।

हमरा हँसी आबि गेल। ओर सँ भमरा कऽ हम हँसि पड़लहुँ, मुदा ध्यान मे चुन्नी चुप रहल। हम सोचलहुँ-अन्हार छइ, चुन्नी मुस्काइत अछि। फेर पुछलियैक—चजैतनइ छइ? भौजी दुलसी मारलखुन अछि? चोट लागल छह तऽ चलह हम मालिश कऽ देत छिअह। पटना सँ तेल अएलहुँ अछि।

आब हम एक दोगराक लग आबि गेल रही। झाँकि कऽ हम देखलियैक, चुन्नीक मुँह बड़ उदास रहैक। फूलल ठोर मे सँ उज्जर दाँत सेहो उदासीक साबूत देत रहैक। लाठी के' बगल मे दबा कऽ दूनू हाथ सँ हम चुन्नीक कान्ह झकझोरि पुछलियैक—की बात छैक? एतेक काल सँ तोँ चुप छियाक छह? कोनो नवबात तऽ नइ भेलौ? तइयो चुन्नी किछु नहिं

बाजल। सिर सँ हमरा हाथ कें अपना कान्ह सँ छोड़ैत कहलक—किछु नहि।

एतेक बाजि आरि देग आगाँ बढ़ि चुन्नी फेर रुकि गेल। हमर मोन तऽ पहिने खटकि गेल रहए, आब सन्देह पक्का भऽ गेल जे दोस परोस मे कोनो अन्नर खराब बात भऽ गेलैक अछि। आब हमरो चुहलबाजी समाप्त भऽ गेल आ कोनो खतराक अनदेशा काटि बनिकऽ मोन कें देखऽ लागल। पारिजेग हमहू आगाँ बढ़िऽ चुन्नीक आगाँ ठाढ़ भय गेलौं आ कहलियैक हमर शान्त कइऽ की भेलौंया। महीस ने तऽ नोहर कक्करो खेत मे चलि गेल छलैक। मालिकक कोनो छौंड़ा बात ने तऽ कहि देलकइ अछि।

एतबो पर चुन्नी चुप रहल। खाली हमर हाथ पकरि ओही ठाम एक-पेरियाक काछ मे गोलरिक भीड़ पर कम्म सँ बैस गेल। हमहू बैस गेलहुँ। मोन हमरो भारी भऽ गेल रहै। कनीकाल हम हूनू चुप रहलहुँ, फेर चुन्नी बाजल, फुस फुसाइ-तों घर नइ जाइ। किया?—अरेखि फाड़ि कऽ आ हम माथिकऽ हम मोकरा बिस देखऽ लगलियैक। जो थोड़बहि मे मोनवला सब बात हमरा कहि देलक आ फेर कान्ह पकरि कऽ कहऽ लागल—बाबूजन, आइ दिन भरि छोटका मालिकक हरबाह-चरबाह तोरा तकैत फिरलकौ। पचीसो आदमी सँ जो तोरा विषय मे पुछलिन कहाँ गेल बलचनमा; भैया, कनीकाल तो कहीं ठाम बैस, हम दौड़ा फिरि कऽ अबैत छी फेर तोरा अपना ओहठाम ल जएबौ।

हमरा पैरक नीचा कें माटि हटऽ लागल। आँखिक आगा अन्धार घेर लेलक। हम थोक बनि गेलहुँ। हमरा ओहि हालत मे छोड़िकऽ चुन्नी दौड़ा फिरऽ लागल। ठेहुन पर कपार राखि हम गुम-सुम ओहिना बैसल रहि गेलहुँ। हमरा मोन मे किसिम-किसिम के भाव उठैत छल। एक मोन कहै छल एहन विपत्ति मे हम कहियो नहि पड़ल छलहुँ। भैया, छोटका मालिकक विषय मे ऊँच विचार तँ हमर कहियो मे रहल, मुदा आदमी एहन राकस होएत, ई तऽ सपनो मे नइ सोचद छलऊँ। एतेक काल मे चुन्नी दौड़ा फिरिकऽ पंहुचा कऽ लागल। आवाज अबैत छलै—छपर छप—छपर-छपर-छप्प।

अइ आवाज सँ हमरा किछ होश भएल आ हम सम्हरि गेलहुँ जे चुन्नी हँ सेहो पूछि ली। एखनर दिमाग किछु काज नइ कऽ रहल छल। मोन विरोक घर भऽ रहल छल।

हाथ पैर झा कऽ फुर्ती पकड़ऽ चुन्नी ऊपर पोखरीक भीड़ पर, जतऽ हम बैसल छलहुँ आएल। हमर कान्ह झोला कऽ ओ कहलक—पगलपन सँ तऽ किछ हेतइ नइ, ठंढा मन सँ सोचि विचारि कऽ आ दोस मीस सँ राय-सलाह लऽ कऽ ठीक करबाक चाही जे एहि राच्छस कें हमरा सोकनि कोना हराए करी!

चुन्नीक इ बात हमरा नीक बुझाएल। दोस्त-महीम, हित-बन्धु सोरा सब हम भेटऽ भाई? जतए अपन बुद्धि काज नहि करए ओतए हीत-मीत सँ एक लेबैक चाही। एक आदमीक बुद्धि सँ दस आदमीक मिलल-जुलल बुद्धि लाख गुना बढ़िया छैक। हमरा एहि समय मे किछु नहि सूझि रहल

छल। चारु दिस घुप्प-अन्हार बुझाइत छल। कोढ़-करेज थर-थर कंपैत छल। एहन दशा मे चुन्नी हमर सहारा भेल आ हम उठि कऽ ठाढ़ भेलहुँ। ओ कहलक—तोंहू घाट पर जो आ हाथ पैर धो आ। हाथ-पैर-मुँह धोला सँ थकान सेही हटती आ मोन सेही ठण्डुक भऽ जाएतो।

लाठी भोकरा थमा कऽ हम पोखरिक घाट दिश बढ़लहुँ। नीचा ठेहुन भरि पानि मे पैस कऽ हाथ मुँह धोलहुँ। खखारि कऽ गला साफ कएलहुँ। रगरि-रगरि कऽ घुट्टी आ पैर धोलहुँ। आँखि-नाक, कपार, कान, कनपट्टी, गरदनि, आ पाँजर पर भीजल हाथ फेरल आ बाहर निकलि अएलहुँ। चुन्नी ठाढ़ तक ठाढ़े छल। फेर हम दूनू गोटे आगाँ गामक दिस बढ़लहुँ। ओ आगाँ-आगाँ आ हम पाछाँ पाछाँ।

चुन्नी हमरा सोझि नहि आबय। मालिकक पट्टी सँ फराके-फराक गोसाँइ ओक भीड़ खेतक आरि पर भऽ डीरी अमातक घरक पछुआर दने ओ हमरा अपना पर लऽ गेलइ।

भाई, तोंहूँ सऽ देहाती के रहऽ बला छऽ। जनमे करैत छहक जे देहातक लोक सब साँझ-सबेरे खा-पी कऽ सुति रहैत छैक। बूढ़ पुरनिया तऽ राति मे यही काल तक खेपैत-खोपैत रहैत छैक वा अन्हारे मे अपन पितलाहा दिनके सोन धारि कऽ विभोर भए बतियाइत-बरबाइत रहैत छैक। दिनक मेहनति सँ चूर-चूर युवाक आ अधेड़ लोकनि बहुत पहिने सुइत रहैत छथि। खेतीक समय नइ रहल तऽ बेकारी मे सुतैत-ओंघियाइत दिन बितैत छैन्ह आ राति कऽ जल्दी नहि सुतैत छथि। लोरिक, विरहा, सहदेव आ कबीरक भजन गबैत रहैत छथि आ फेर कोनो चौपाड़ि पर पुआरक बीड़ी पर बैसि सौ इनकर लोकनि के समाकुल मलेत आ चिलम फुकैत देखबहुन। स्त्रीगण सब बेर तक जगेत रहै छथि आ तड़के उठि जाइ छथि।

चुन्नीक बाप मनियार मंडल नामूली ढंगक गृहस्थ रहथि। अपन पहिल उमिरक साल बरख तक दादाक कोनो पटकल मे मजूरी कऽ कऽ काकी कऽ पैया श्री चुन्नीक माए के पठौने रहथीन। चुन्नीक माए जिनका छोटे उमिर सऽ हम धन्नी काकी कहक अभ्यस्त भऽ गेल रही; बड़ा लछमिनिया रहैक। अपन परबलाक कमाइ सँ धीरे-धीरे ओ तीन बीघा खेत लऽ नेने रहए। आब ई लोकनि छोटका जातिबला मे हैसियत बला बुझल जाइत रहथि। थुकले जाइत रहथिन्हे नहि, हैसियती रहनि। दू महीस, एक जोड़ा बरद आ आँगन मे चारु दिस घर रहैन। कमाए-खटाए बला तीन समर्थ जवान रहैक। मजबूत काठीक दूटा कमासुत स्त्रीगण रहैक। बेर बखत पर सलाह देबाक लेल बूढ़ रहैक। लछमिनियाँ बूढ़ रहैक। हमरा अइठाम एहन परिवार के भरक-पूरल परिवार कहैत छैक।

ओइ राति कतो बिरादरी मे भोज रहैक। चुन्नीक दूनू भाई आ बुढ़क अपने बाल-बच्चा के संग लऽ कऽ पाछ गरमा गेल रहथि। मानसक झंझटि नइ रहला सँ अनी-जाइत सब परोसियाक आँगन मे गप्प लड़ाबऽ गेल रहथि दरवाजा पर महीस आ बरद बान्हल रहैक। बेठार खाली रहैक आ घर सुन्न।

एहन समय मे पैर मारिक हम दूनू ओइ आँगन मे ढुकलहुँ। चुन्नी अपना पुबरिया घरक केवाड़ खोलि कऽ कहलक—आराम करह, हम भोजनक इन्तजाम करैत छी आ तोरा माएक समाचार सेहो लऽ अबैत छी।

चुन्नी चलि गेल। हम अपन लाठी कोना मे भीतक अबलेमा सऽ ठाढ़ कऽ देलियैक। गंजी निकालि कऽ अलगनी पर टाँगि देलियैक। घोतीक फेंटा खोलि कऽ लेलहुँ आ ओछाएल सितलपाटी पर अन्हार मे पसरि रहलहुँ।

बड़ा भूख लागल रहए भाई। मुदा जे किछु भेल रहैक ताहि कारण भूख सुखा कऽ अंतरीक कोनो कोन मे घुसिया गेल छल। हमर दाइ एक बेर

कहिने रहै—बहुत जल्दी खुशी हो तहनी भूख मेटा जाइत छैक। से ओर दिन हमर भूख उड़ि गेल। हम बेर-बेर एगमर ओह अन्हार मे इएह सोची जे छोटका मालिक हँ डाँटि कऽ मोर्चा लेबऽ बिना निस्तार नहि। मात्र डाँट रहैक। हू मे हँ एन, चाहे अपना बहिन के ओह जालिम हँ हाथ कऽ दी अथवा मुंसीजक पहाड़ खुरी-खुरी माथ पर उठाली। सेसर कोनो रास्ता नहि। मोने-मोन पक्का कऽ लेलहुँ जेल चलि जायब, फाँसी चढ़ि जायब, गोली हँ उड़ि जायब मुदा एहि शैतानक आगां अपनां मे माथ नहि झुकायब। भैया हम उठि कऽ बैस रहलहुँ। काँड़ सोझ कऽ लेलहुँ। ओह शून्य अन्हार मे हम अपना मुदइक छाँह साफ-साफ देखऽ लगलहुँ। ओह राक्षस के ललकारैत हम बाजि उठलहुँ—बेशक, हम गरीब छी। तोरा संग धरन धन, कुल-खानदान बाप दादाक नाँव, जरोस-बड़ोसक जान-पहचान, आ जिला-जवार मे मान छो आ हमरा संग किछु नहि अछि। मुदा आखरी दम तक हम तोरा विरुद्ध अटल रहब। अपन सम्पूर्ण ताकति के तोरा विरोध मे लगा देब। माए आ बहिन के बिप दऽ देब किन्तु तो ओकरा लोकनि के अपन रखेली बनैबाक अपना कहियो पूर्ण नहि कऽ सकबैं.....

हम बेसल नहि रही सकलहुँ। भीतर सँ निकलि आङन मे घूमि फिर करए लगलहुँ। तो कलकताक चिड़िया घर देखने छह भैया? ओतए जाहि पिंजड़ामे शेर रहैत छैक से देखने हेबहक शेर अखन बिलबिएल रहैत छैक तऽ क्रोध सँ ओकर आँखि लाल रहैत छैकैक आ पिंजड़ा मे बन्द रहैत छैक तऽ कि करैत छैक? इएह कि अपन पिंजड़ा मे पाँच डेग एमहर आ पाँच डेग ओमहर, कहुना क्रोधक आँच के घूमि-फिर कऽ पचबैत अछि। से भैया, हमहुँ अपना क्रोधक आँच मे चुन्नीक ओह छोट-छिन आँगन मे फेरा लगा कए पचाबए लगलहुँ।

अरे, तो चक्कर लगा रहल छँ—चुन्नीक आवाज आएल तऽ हमरा ध्यान

टूटल। ओकरा एक हाथ मे रोटी रहैक आ दोसर मे कटोरा। हमरा किछु पुछबा हँ पहिने ओ बाजल—रेबनी सुति रहल छैक आ चाची (हमर माए) पड़ल अछि। हम ओकरा लोकनि के समका बुझा देलियैक अछि। तोरा विषय मे निश्चित कऽ देलियैक अछि। से पीढ़ी पर बैस जो आ खाले हम डोल कऽ टटका पानि भरि लबैत छी।

हम नहि बैसलहुँ तऽ चुन्नी हाथ पकड़ि कऽ बैसा देलक। रोटीक समहर टुकड़ी तोरि कऽ आ तरकारी कला कटोरी मे चुबाकऽ चुन्नी हमरा मुँह मे कोंचि देलक। मिरचाइ हम नेने छऽ कनी कम खाइत छी मुदा रामशिमनीक गोइ तरकारी मे बनाबऽवाली नइ जानी कतेक मिरचाइ कोंचि देने रहैक। मिरचाइक अधिक कड़ स्वाद हमर निशा के तोरि देलक। निशे कहिअइ माइ, कारण मोनक बेचैनी, दिमागक परेशानी आ भीतरक बेकली मनुष्य के सोहिना बेहोश कऽ देत छैक जेना दारू आ ताड़ी!

तऽ तरकारीक कड़ सँ हमर ध्यान टूटल, हम पुछलियैक—तो कि पढ़लह?

हम तऽ खा कऽ पोखरिक दिस गेलहुँ। छोटका महींसक मोन खराब छैक। गरदनि मे मेलैक अछि। अही वास्ते जतिया मोन मे नहि जा सकलहुँ छैक बिनके राखल छलैक। तोरा वास्ते रामचरन काकाक घर सँ रोटी लेलिअइ अछि। हमका ओहिठाम बुद्धिबाक पथ-पानि लेल सतति आगि जरिते रहैत छैक।

चुन्नी टटका पानि लऽ आएल रहै। रोटी जौ के रहैक। रामशिमनीक तरकारी आ जौ के रोटी बहुत बढ़िया लगैत छैक, मुदा ओह राति तऽ हमर भीमे उधरा गेल रहए जेना-तेना गिर कऽ भरि इच्छा पानि पीलहुँ आ बाहर जा कऽ लघी कऽ अएलहुँ। हम चुन्नी सँ बात करऽ चाहैत रही, मुदा ओकरा कोनो जरूरी काज सँ घमनटोली जएबाक रहै। ओ कहलक अखन आराम करह। भोरे हमरा लोकनि छठ्ठ आ तखन गप्प होयत।

हम बहुत कालतक गुनधुन मे पड़ल रहलहुँ। किसिम-किसिमक बात सोचैत रहलहुँ आ ओहि सोच फिकिर मे पता नइ कखन नींन आबिगेल।